

राहत इंदौरी

दो कदम और सही

नुमाइदा शायरी



दो क़दम और सही

नुमाइंदा शायरी

दो क़दम और सही

नुमाइंदा शायरी

राहत इंदौरी

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी



मंजुल पब्लिशिंग हाउस



मंजुल पब्लिशिंग हाउस

कॉर्पोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003

विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वेबसाइट: www.manjulindia.com

वितरण केन्द्र
अहमदाबाद बेंगलुरु, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,
हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

दो क्रदम और सही
कॉपीराइट © 2017 राहत इंदौरी
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह संस्करण 2017 में पहली बार प्रकाशित

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

ISBN 978-81-8322-788-9

राहत इंदौरी इस पुस्तक के लेखक होने की नैतिक ज़िम्मेदारी वहन करते हैं

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।



उर्दू के विश्वविख्यात शायर डॉ. राहत इंदौरी का जन्म 1 जनवरी, 1950 को इंदौर में स्वर्गीय रिफ़तुल्लाह कुरैशी एवं स्वर्गीया मक़बूल बी के घर चौथी संतान के रूप में हुआ। राहत साहब ने आरंभिक शिक्षा देवास तथा इंदौर के नूतन स्कूल से प्राप्त करने के बाद इंदौर विश्वविद्यालय से उर्दू में एम.ए. एवं 'उर्दू में मुशायरा' शीर्षक से पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। तत्पश्चात् 16 वर्षों तक इंदौर विश्वविद्यालय में उर्दू साहित्य अध्यापन और त्रैमासिक पत्रिका 'शाखें' का 10 वर्षों तक सम्पादन किया। इसके साथ ही मुशायरों और कवि सम्मेलनों में शिरकत का सिलसिला आरंभ हुआ, जो आज तक बदस्तूर जारी है।

पिछले 40-45 वर्षों से राहत साहब भारत भर के प्रमुख शहरों के अलावा अमरीका, कैंनेडा, जर्मनी, इंग्लैंड, सिंगापुर, पाकिस्तान, क़तर, ओमान, बहरीन, सऊदी अरब, यू.ए.ई., बांग्लादेश, नेपाल, भूटान जैसे देशों में अनेकों बार आमंत्रित किए गए हैं और वहाँ अपने लाखों चाहने वालों को अपनी शायरी और प्रस्तुतिकरण के जादुई अंदाज से रूबरू करा चुके हैं। देश दुनिया के अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से उन्हें नवाज़ा जा चुका है।

इंदौर, भोपाल, दिल्ली, लखनऊ और लाहौर विश्वविद्यालय में डॉ. राहत इंदौरी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं जीवन पर शोध के पश्चात् स्कॉलर्स ने एम.फिल. एवं पीएच.डी. डिग्रियाँ प्राप्त की हैं। बदायूँ की मशहूर उर्दू साहित्यिक पत्रिका 'लम्हे लम्हे' ने डॉ. इंदौरी पर 'डॉ. राहत इंदौरी - फन और शख्सियत' नाम से एक वृहद ग्रंथ का प्रकाशन किया है, जिसमें हमारे समय के लगभग सभी प्रमुख आलोचक और कवियों के लेख शामिल हैं।

राहत साहब ने हिन्दी फ़िल्मों के लिए भी कई मशहूर गीत रचे हैं और लगभग सभी प्रमुख ग़ज़ल गायकों ने उनकी ग़ज़लों को अपनी आवाज़ दी है।

वे इंदौर में अपनी पत्नी सीमा राहत, बेटे-बहू, पोता-पोती के साथ रहते हैं। उनकी बेटी शिबली देवास में ब्याही गई हैं। बड़े बेटे फैसल राहत एक बैंकर हैं और छोटे बेटे सतलज राहत ई.टी.वी. में न्यूज़ कोरेस्पॉन्डेंट के रूप में कार्य करने के साथ ही शायरी भी करते हैं।

संपर्क:

राहत इंदौरी

पोस्ट बॉक्स 555, इंदौर



[/rahatindori](https://twitter.com/rahatindori)



[/rahatindoriofficial](https://facebook.com/rahatindoriofficial)



[.rahatindoripost@gmail.com](mailto:rahatindoripost@gmail.com)



rahatindori.com

उर्दू पुस्तकें:

- धूप-धूप
- पाँचवा दरवेश
- नाराज़

हिन्दी पुस्तकें:

- मेरे बाद
- धूप बहुत है
- चाँद पागल है
- मौजूद
- नाराज़

मिसाइली लहजे और तेज़ाबी तेवर का फ़नकार

ओकाबी नज़र, मिसाइली लहजा और तेज़ाबी तेवर जिस फ़नकार की पहचान हो उसके दौर को पहचानने की कोशिश कीजिए तो ज़ाहिर हुए बग़ैर नहीं रहता कि उसका ज़िन्दा ज़मीर हर मस्लेहत को इनकारने, हर बंदिश को ठुकराने और हर रियाकारी को बेनकाब करने ही में तमानीयत महसूस करता है। जिसने ख़्वाब देखने की उम्र से ही हक़ीक़त शनासी के जहन्नम से गुज़रना सीखा हो उसके लफ़्ज़ अंगारे और मिसरे शोले न बन जाएं तो और क्या बनें। चारों तरफ़ फैले हुए बदउनवान और बेएतबार समाज के खोखलेपन और उस खोखलेपन के खिलाफ़ शदीद रद्दे अमल ने डॉ. राहत इंदौरी की शायरी को कुछ ऐसे मौज़ुआत फ़राहम कर दिए हैं, जिन्हें तख़लीकी क़लम ने इससे पहले छूने या छेड़ने का तसव्वुर भी नहीं किया था, इसलिए इसकी नुकीली काट जहाँ उन्हें अवाम की आखिरी बेसहारा सफ़ तक ले गयी वहीं ख़्वास उनके एहतेजाजी लबो लहजे के कायल हुए बग़ैर न रह सके। उर्दू मुशायरे की मक़बूलियत के आज़मूदा नुस्खों को राहत ने अपनी शोला बयानी से कुछ इस तरह हफ़-ए-बातिल साबित कर दिखाया कि तारीख़-ए-तहत का एक नया उनवान बन गया। बज़ाहिर वक़्त के हर ज़ुल्म के खिलाफ़ सीना सिपर हो जाने वाले राहत इंदौरी एन आलम ए एहतेजाज में भी शायरी से दूर नहीं होते। यहीं उनके तख़लीकी रख रखाव का हुस्न उभरता है जो एक तरफ़ भीड़ को भीड़ की ज़हनी सतह पर जाकर तो दूसरी तरफ़ अदब के मेयारे नक़दो नज़र को भी अपनी तरफ़ मुतवज्जो करता है।

जब हज़ारों लोगों पर मुश्तमिल मुशायरों में अपनी तमाम तर घन गरज के साथ छा जाने वाले राहत इंदौरी सफ़हे किरतास पर उभरते हैं तो ज़ाहिरी व मानवी ख़ुशबुओं से मुज़रयन उनके शेरी पैकर और उर्दू की अदबी तनक़ीद से आँखों में आँखे डालकर बात करने का हौसला करते दिखाई देते हैं, और फिर ये मानना पड़ता है कि तमतराक़े इक़तेदार के गिरेबान पर हाथ डालने की हिम्मत रखने वाले राहत इंदौरी की मुरब्बी ज़हनीयत सरसती खाकसारियत और तबई क़लन्दरियत उन्हें एक ऐसा मुतवाज़ी अन्दाज़ बख़्शती है जो अपने अहद में अलग ही फ़नकार साबित करने को काफ़ी है।

—प्रो. वसीम बरेलवी

मंच का जादूगर

डॉ. राहत इंदौरी उर्दू तहज़ीब के ऐसे वट वृक्ष हैं जिसकी छाया में कई नवांकुर शायर और कवि बैठे हैं जिन्होंने उस वृक्ष की छाया भी महसूस की है। मैंने उन्हें जब कवि सम्मेलनों या मुशायरों में सुना है और मुझे जब भी उनके साथ बैठने का सौभाग्य मिला है, तो मुझे उनकी शायरी उर्दू और हिन्दी की तहज़ीब का जीता जागता उदाहरण लगी है। मैं राहत साहब से तहज़ीब सीखने की कोशिश करता हूँ और जब वे मंच पर स्नेह से गले लगा लेते हैं, तब जो सुख मैं महसूस करता हूँ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं उनका श्रोता हूँ और कई बार मंच पर जब वे पढ़ते तो मैं कोशिश करता हूँ कि इस जादूगर का वो जादू देख सकूँ, सीख सकूँ, जो उनकी शायरी, शैली और प्रस्तुतीकरण में बोलता है।

श्रोताओं के दिलों पर राज करने का जो हुनर राहत साहब के पास है, मैं उससे चमत्कृत हूँ और मेरी ये दुआ है कि हिन्दुस्तानी तहज़ीब का ये स्वर हम सदा सुनते रहें।

—डॉ. हरिओम पँवार



राहत साहब में कुछ बात है जो उन्हें भीड़ से अलग करती है। शायरी में क्या कहा गया है यह तो महत्वपूर्ण है ही लेकिन कैसे कहा गया है यह और भी मायने रखता है, इसे हम क्राफ़्टिंग कह सकते हैं। राहत साहब शायरी में कंटेन्ट के एतबार से तो अहम शायर हैं ही लेकिन कंटेन्ट को क्राफ़्टिंग के फ़न से वे उसे यादगार और बड़ा बना देते हैं। ये उनका हुनर ही है जो उन्हें एक खास मुकाम पर पहुँचा देता है।

राहत साहब जब नई पीढ़ी के लिए शेर पढ़ते हैं तो युवाओं में ऐसी लहर दौड़ उठती है कि जैसे वह उनके ही दिल से निकली बात हो -

**तूफ़ानों से आँख मिलाओ, सैलाबों पर वार करो
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो तैरके दरिया पार करो**

या फिर

**शाखों से टूट जाए वो पत्ते नहीं हैं हम
आँधी से कोई कह दे कि औकात में रहे**

राहत साहब की ग़ज़लों का संकलन करने का मौक़ा मिला तो मुझे न सिर्फ़ खुशी हुई बल्कि एक ज़िम्मेदारी का अहसास भी हुआ। सागर से कुछ चुनिन्दा मोतियों को चुनने का काम बेहद मुश्किल जान पड़ा क्योंकि हर मोती मेरे सामने हाथ उठाकर खड़ा हो जाता था कि मैं क्यों नहीं, और मैं क्यों नहीं! मैं कुछ बेहतरीन शायरी इस किताब में सँजोने की कोशिश कर रहा हूँ, और पुरउम्मीद हूँ कि राहत जी के चाहने वालों को यह संग्रह पसंद आएगा।

—सचिन चौधरी
संकलनकर्ता

[नई गज़लें](#)

[चुनिंदा गज़लें](#)

[चुनिंदा अशआर](#)

[फ़िल्मी नग़मे](#)

नई ग़ज़लें



1



ज़ुल्फ़ बन कर बिखर गया मौसम,
धूप को छांव कर गया मौसम...

मैंने पूछी थी खैरियत तेरी,
मुस्करा कर गुज़र गया मौसम...

फिर वो चेहरा नज़र नहीं आया,
फिर नज़र से उतर गया मौसम...

तितलियाँ बन के उड़ गयीं रातें,
नींद को ख़्वाब कर गया मौसम...

तुम न थे तो मुझे पता न चला,
किधर आया किधर गया मौसम...

2



दिल बुरी तरह से धड़कता रहा,
वो बराबर मुझे ही तकता रहा...

रोशनी सारी रात कम ना हुई,
तारा पलकों पे इक चमकता रहा...

छू गया जब कभी ख्याल तेरा,
दिल मेरा देर तक धड़कता रहा...

कल तेरा ज़िक्र छिड़ गया घर में,
और घर देर तक महकता रहा...

उसके दिल में तो कोई मैल न था,
मैं खुदा जाने क्यों झिझकता रहा...

मीर को पढ़ते पढ़ते सोया था,
रात भर नींद में सिसकता रहा...

3



बेवफा होगा, बावफा होगा,
उससे मिल कर तो देख क्या होगा

बैर मत पालिए चरागों से
दिल अगर बुझ गया तो क्या होगा

सर झुका कर जो बात करता है
तुमसे वो आदमी बड़ा होगा

क्रहक्रहे जो लुटा रहा था कभी
वो कहीं छुप के रो रहा होगा

उससे मिलना कहाँ मुक़द्दर है
और जी भी लिए तो क्या होगा

राहत एक शब में हो गए हैं रईस
कुछ फकीरों से मिल गया होगा



अब ना मैं वो हूँ, ना बाकी हैं ज़माने मेरे
फिर भी मशहूर हैं शहरों में फसाने मेरे

ज़िन्दगी है तो नए ज़ख्म भी लग जाएंगे
अब भी बाक़ी हैं कई दोस्त पुराने मेरे

आपसे रोज़ मुलाक़ात की उम्मीद नहीं
अब कहाँ शहर में रहते हैं ठिकाने मेरे

उम्र के राम ने साँसों का धनुष तोड़ दिया
मुझ पे एहसान किया आज खुदा ने मेरे

आज जब सो के उठा हूँ तो ये महसूस हुआ
सिसकियाँ भरता रहा कोई सिरहाने मेरे

5



तू शब्दों का दास रे जोगी
तेरा क्या विश्वास रे जोगी

इक दिन विष का प्याला पी जा
फिर न लगेगी प्यास रे जोगी

ये साँसों का बंदी जीवन
किसको आया रास रे जोगी

विधवा हो गयी सारी नगरी
कौन चला बनबास रे जोगी

पुर आई थी मन की नदिया
बह गए सब एहसास रे जोगी

एक पल के सुख की क्या कीमत
दुख हैं बारह मास रे जोगी

बस्ती पीछा कब छोड़ेगी
लाख धरे सन्यास रे जोगी

6



ये ज़िन्दगी किसी गूंगे का ख्वाब है बेटा
संभल के चलना के रस्ता खराब है बेटा

हमारा नाम लिखा है पुराने किलों पर
मगर हमारा मुकद्दर खराब है बेटा

गुनाह करना किसी बेगुनाह की खातिर
मेरी निगाह में कार-ए-सवाब¹ है बेटा

अब और ताश के पत्तों की सीढ़ियों पे न चढ़
के इसके आगे खुदा का अज़ाब है बेटा

हमारे सेहन की मेहंदी पे है नज़र उसकी
ज़मीनदार की नीयत खराब है बेटा

¹. पुण्य का काम

7



जो मनसबों¹ के पुजारी पहन के आते हैं
कुलाह² तौक़³ से भारी पहन के आते हैं

अमीर ए शहर तेरी तरह क़ीमती पोशाक
मेरी गली में भिखारी पहन के आते हैं

यही अक़ीक़⁴ थे शाहों के ताज की ज़ीनत
जो उँगलियों में मदारी पहन के आते हैं

हमारे ज़िस्म के दाग़ों पे तब्बसरा करने
क़मीज़ें लोग हमारी पहन के आते हैं

इबादतों का तहफ़्फ़ुज़⁵ भी उनके ज़िम्मे है
जो मस्जिदों में सफ़ारी पहन के आते हैं

-
1. ऊँचे पद
 2. सर पर पहनी पगड़ी/ताज
 3. गले में डाली हुई बेड़ियाँ
 4. रंग बिरंगे पत्थर
 5. संरक्षण



मस्जिद खाली खाली है
बस्ती में क़व्वाली है

हम जैसों से खाली है
दुनिया क़िस्मत वाली है

नूर जहाँ है पहलू में
दिल में सब्ज़ी वाली है

माज़ी हो या मुस्तक़बिल
अपनी वही बेहाली है

दरिया फिर भी दरिया है
जग ने प्यास बुझा ली है

दुनिया पहले पत्थर थी
हमने मोम बना ली है

साया साया ढूँड उसे
जिसने धूप निकाली है

कुछ तब्दीली हो यारों
बरसों से खुशहाली है



कितनी पी, कैसे कटी रात मुझे होश नहीं
रात के साथ गई बात मुझे होश नहीं

शब गुज़ार आया हूँ मस्जिद में के मैखाने में
मुझसे पुछो ना सवालात मुझे होश नहीं

मुझको ये भी नहीं मालूम के जाना है कहाँ
थाम ले कोई मेरा हाथ मुझे होश नहीं

आँसुओं और शराबों में गुज़र है अब तो
मैंने कब देखी थी बरसात मुझे होश नहीं

जाने क्या टूटा है पैमाना कि दिल है मेरा
बिखरे-बिखरे हैं खयालात मुझे होश नहीं

मैंने बेहोशी के आलम में बका है क्या-क्या
दिल पे लेना न कोई बात मुझे होश नहीं



सूरज, सितारे चाँद मेरे साथ में रहे
जब तक तुम्हारे हाथ मेरे हाथ में रहे

साँसों की तरह साथ रहे सारी ज़िन्दगी
तुम ख़्वाब से गए तो ख़्यालात में रहे

हर बूँद तीर बन के उतरती है रूह में
तन्हा मेरी तरह कोई बरसात में रहे

हर रंग हर मिज़ाज में पाया है आपको
मौसम तमाम आपकी खिदमात में रहे

शाखों से टूट जाएँ वो पत्ते नहीं है हम
आँधी से कोई कह दे के औक्रात में रहे



दिए बुझे हैं मगर दूर तक उजाला है
ये आप आए हैं या दिन निकलने वाला है

नई सहर है नया गम नया उजाला है
रज़ाई छोड़ दो अब दिन निकलने वाला है

ख़याल में भी तेरा अक्ल देखने के बाद
जो शख्स होश गँवा दे वो होश वाला है

जवाब देने के अन्दाज़ भी निराले हैं
सलाम करने का अन्दाज़ भी निराला है

सुनहरी धूप है सदक़ा तेरे तबस्सुम का
ये चाँदनी तेरी परछाई का उजाला है

है तेरे पैरों की आहट ज़मीन की गर्दिश
ये आसमां तेरी अंगड़ाई का हवाला है



मुश्किल से हाथों में खज़ाना पड़ता है
पहले कुछ दिन आना-जाना पड़ता है

खुश रहना आसान नहीं है दुनिया में
दुश्मन से भी हाथ मिलाना पड़ता है

यूँ ही नहीं रहता है उजाला बस्ती में
चाँद बुझे तो घर भी जलाना पड़ता है

तू भी फलों का दावेदार निकल आया,
बेटा पहले पेड़ लगाना पड़ता है

मुश्किल फ़न है ग़ज़लों की रोटी खाना
बहरों को भी शेर सुनाना पड़ता है



क्या खरीदोगे ये बाज़ार बहुत महंगा है
प्यार की ज़िद न करो प्यार बहुत महंगा है

चाहने वालों की एक भीड़ लगी रहती है
आज-कल आपका दीदार बहुत महंगा है

इश्क़ में वादा निभाना कोई आसान नहीं
करके पछताओगे इकरार बहुत महंगा है

आज तक तुमने खिलौने ही खरीदे होंगे
दिल है ये दिल मेरे सरकार बहुत महंगा है

हम सुकूँ ढूँढने आए थे दुकानों में मगर
फिर कभी देखेंगे इस बार बहुत महंगा है



न वो रास्ते न वो हमसफ़र न वो हम रहे न वो तुम रहे
वो जो शहर था है वही मगर न वो हम रहे न वो तुम रहे

जो हमारे दिल पे गुज़र गई जो तुम्हारे दिल पे गुज़र गई
न हमें पता न तुम्हें खबर न वो हम रहे न वो तुम रहे

कभी हम तुम्हारे करीब थे कभी तुम हमारे हबीब थे
मगर अब नहीं कोई मोतबर¹ न वो हम रहे न वो तुम रहे

कभी रात मन्नते माँगना कभी सुबह देर से जागना
न वो शब रही न रही सहर न वो हम रहे न वो तुम रहे

जो तआल्लुक्रात थे क्या हुए जो तसव्वुरात थे क्या हुए
के वफ़ाए इश्क़ के मोड़ पर न वो हम रहे न वो तुम रहे

¹. भरोसे के लायक



आग में फूलने-फलने का हुनर जानते हैं
न बुझा हमको के जलने का हुनर जानते हैं

हर नए रंग में ढलने का हुनर जानते हैं
लोग मौसम में बदलने का हुनर जानते हैं

आप ने सिर्फ़ गिराने की अदा सीखी है
और हम गिर के संभलने का हुनर जानते हैं

क्या समेटेगा हमें वक्रत का गहरा दरिया
हम किनारों से उबलने का हुनर जानते हैं

चाल चलने में महारत है यहाँ लोगों को
और हम बचके निकलने का हुनर जानते हैं



टूटा हुआ दिल तेरे हवाले मेरे अल्लाह
इस घर को तबाही से बचाले मेरे अल्लाह

दुनिया के रिवाजों को भी तोड़ दूँ लेकिन
इक शख्स मुझे अपना बनाले मेरे अल्लाह

वो साथ वो दिन-रात वो नगमात वो लम्हे
लौटा दे मुझे मेरे उजाले मेरे अल्लाह

मैं जिसके लिए सारे ज़माने से खफा हूँ
वो खुद ही मुझे आ के मना ले मेरे अल्लाह

मैं किसको सदा दूँ जो मेरे ख्वाब में आकर
काँटे मेरी पलकों से निकाले मेरे अल्लाह



आप हमसे बेखबर ऐसे न थे
दिल के दुश्मन थे मगर ऐसे न थे

तुम न थे तो ज़िन्दगी बेरंग थी
रात-दिन शाम-ओ-सहर ऐसे न थे

मन्ज़िलें दुश्वार थीं कल भी मगर
रास्ते और हमसफ़र ऐसे न थे

अब तो हर खिड़की में रोशन चाँद है
पहले इस बस्ती में घर ऐसे न थे

तेरे दर से उठ के ये हालत हुई
कल तलक हम दर बदर ऐसे न थे



ज़िन्दगी नाम को हमारी है
आखरी सांस भी तुम्हारी है

तेरी चाहत कहाँ पे ले आई
तुझसे मिलकर भी बेकरारी है

मुझसे पुछो चमक सितारों की
मैंने रो-रो के शब गुज़ारी है

आपके हाथ में लकीरें हैं
वरना तक्रदीर तो हमारी है

एक तस्वीर में हैं दो शक्लें
या हमारी है या तुम्हारी है

दिल मेरा तोड़ते हो लो तोड़ो
चीज़ मेरी नहीं तुम्हारी है



प्यार का रिश्ता कितना गहरा लगता है
हर चेहरा अब तेरा चेहरा लगता है

तुमने हाथ रखा था मेरी आँखों पर
उस दिन से हर ख्वाब सुनहरा लगता है

उस तक आसानी से पहुँचना मुश्किल है
चाँद के दर पे रात का पहरा लगता है

जब से तुम परदेस गए हो बस्ती में
चारों तरफ़ सहारा ही सेहरा लगता है

मजबूरी रोने भी नहीं देती मुझको
दरियाओं पे आज भी पहरा लगता है



अभी दिल में दर्द कम है, अभी आँख तर नहीं है
तेरे ग़म से मेरा रिश्ता अभी मोतबर नहीं है

है ज़माने भर में चर्चे मेरी सर बुलन्दियों के
ये इनायतें हैं तेरी ये मेरा हुनर नहीं है

तुझे लिख के जो न चूमे तुझे देख कर न झूमे
वो ज़ुबां ज़ुबां नहीं है वो नज़र नज़र नहीं है

ये ज़माना लाख गुज़रे नए हादसों से लेकिन
मैं तेरी पनाह में हूँ मुझे कोई डर नहीं है

ये जो आखिरी सफ़र है यही हासिल-ए-सफ़र है
मगर इस सफ़र में अपना कोई हमसफ़र नहीं है

चुनिंदा ग़ज़लें



1



उँगलियाँ यूँ न सब पर उठाया करो
खर्च करने से पहले कमाया करो

ज़िन्दगी क्या है खुद ही समझ जाओगे
बारिशों में पतंगें उड़ाया करो

दोस्तों से मुलाक़ात के नाम पर
नीम की पत्तियों को चबाया करो

शाम के बाद जब तुम सहर देख लो
कुछ फ़क़ीरों को खाना खिलाया करो

अपने सीने पे दो गज़ ज़मीं बाँध कर
आसमानों का ज़र्फ़ ¹आज़माया करो

चाँद सूरज कहाँ, अपनी मन्ज़िल कहाँ
ऐसे वैसों को मुँह मत लगाया करो

2



लोग हर मोड़ पे रुक रुक के सँभलते क्यूँ हैं
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यूँ हैं

मैक़दा ज़र्फ़ के मीज़ान¹ का पैमाना है
खाली शीशों की तरह लोग उछलते क्यूँ हैं

मोड़ होता है जवानी का सँभलने के लिये
और सब लोग यहीं आके फिसलते क्यूँ हैं

नींद से मेरा तआल्लुक ही नहीं बरसों से
ख़्वाब आ आके मेरी छत पे टहलते क्यूँ हैं

मैं न जुगनू हूँ दिया हूँ न कोई तारा हूँ
रोशनी वाले मेरे नाम से जलते क्यूँ हैं

¹. तराजू

3



सबको रूसवा बारी बारी किया करो
हर मौसम में फ़तवे जारी किया करो

रातों का नींदों से रिश्ता टूट चुका
अपने घर की पहरेदारी किया करो

क्रतरा क्रतरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो

रोज़ क़सीदे लिखो गूंगे बहरों के
फ़ुरसत हो तो ये बेगारी किया करो

शब भर आने वाले दिन के ख़्वाब बनो
दिन भर फ़िक्र-ए-शब बेदारी किया करो

चाँद ज़्यादा रौशन है तो रहने दो
जुगनू भय्या जी मत भारी किया करो

जब जी चाहे मौत बिछा दो बस्ती में
लेकिन बातें प्यारी-प्यारी किया करो

रात बदन दरिया में रोज़ उतरती है
इस कश्ती में ख़ूब सवारी किया करो

रोज़ वही एक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तय्यारी किया करो

कागज़ को सब सौंप दिया ये ठीक नहीं
शेर कभी ख़ुद पर भी तारी किया करो

4



अँधेरे चारों तरफ साँए साँए करने लगे
चिराग़ हाथ उठा कर दुआएँ करने लगे

तरक्की कर गये बीमारियों के सौदागर
ये सब मरीज़ हैं जो अब दवाएँ करने लगे

ज़मीं पर आ गये आँखों से टूट कर आँसू
बुरी ख़बर है फ़रिश्ते ख़ताएँ करने लगे

झुलस रहे हैं यहाँ छाँव बांटने वाले
वह धूप है के शजर इल्लिजाएँ करने लगे

अजीब रंग था मजलिस का, ख़ूब महफ़िल थी
सफ़ेद पोश उठे काँए-काँए करने लगे

5



हर मुसाफ़िर है सहारे तेरे
कश्तियाँ तेरी कनारे तेरे

तेरे दामन को खबर दे कोई
टूटते रहते हैं तारे तेरे

धूप दरिया में खानी थी बहुत
बह गए चाँद सितारे तेरे

तेरे दरवाज़े को जुम्बिश¹ न हुई
मैंने सब नाम पुकारे तेरे

बे तलब आँखों में क्या क्या कुछ है
वह समझता है इशारे तेरे

कब पसीजेंगे यह बहरे बादल
हैं शजर हाथ पसारे तेरे

मेरा इक पल भी मुझे मिल न सका
मैंने दिन रात गुज़ारे तेरे

तेरी आँखें तेरी बीनाई है
तेरे मन्ज़र हैं, नज़ारे तेरे

यह मेरी प्यास बता सकती है
क्यों समन्दर हुए खारे तेरे

जो भी मनसूब² तेरे नाम से थे
मैंने सब क़र्ज़ उतारे तेरे

तूने लिखा मेरे चेहरे पे धुआँ
मैंने आइने संवारे तेरे

और मेरा दिल वही मुफ़लिस का चिराग़
चाँद तेरा है सितारे तेरे

1. हरकत

2. नामित

6



अगर खिलाफ़ हैं होने दो जान थोड़ी है
ये सब धुआँ है कोई आसमान थोड़ी है

लगेगी आग तो आएँगे घर कई ज़द में
यहाँ पे सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है

मैं जानता हूँ कि दुश्मन भी कम नहीं लेकिन
हमारी तरह हथेली पे जान थोड़ी है

जो आज साहिब-ए-मसनद¹ हैं कल नहीं होंगे
किरायेदार हैं ज़ाती मकान थोड़ी है

हमारे मुँह से जो निकले वही सदाक़त² है
हमारे मुँह में तुम्हारी ज़बान थोड़ी है

सभी का खून है शामिल यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दुस्तान थोड़ी है

¹. सत्ताधीश

². सच्चाई



समन्दरों में मुआफ़िक़ हवा चलाता है
जहाज़ खुद नहीं चलते, खुदा चलाता है

ये जाके मील के पत्थर पे कोई लिख आये
वो हम नहीं हैं जिन्हें रास्ता चलाता है

तुझे ख़बर नहीं मेले में घूमने वाले
तेरी दुकान कोई दूसरा चलाता है

वो पाँच वक़्त नज़र आता है नमाज़ों में
मगर सुना है कि शब में जुआ चलाता है

ये लोग पाँव नहीं ज़हन से अपाहिज हैं
उधर चलेंगे जिधर रहनुमा चलाता है

हम अपने बूढ़े चराग़ों पे ख़ूब इतराये
और उसको भूल गये जो हवा चलाता है



तेरे वादे की तेरे प्यार की मोहताज नहीं
ये कहानी किसी किरदार की मोहताज नहीं

आसमां ओढ़ के सोए हैं खुले मैदां में
अपनी ये छत किसी दीवार की मोहताज नहीं

खाली कशकौल¹ पे इतराई हुई फिरती है
ये फक्कीरी किसी दस्तार की मोहताज नहीं

खुद क़फ़ीली का हुनर सीख लिया है मैंने
ज़िन्दगी अब किसी सरकार की मोहताज नहीं

मेरी तहरीर है चस्पां मेरी पेशानी पर
अब ज़ुबाँ ज़िल्लत-ए-इज़हार की मोहताज नहीं

लोग होठों पे सजाए हुए फिरते हैं मुझे
मेरी शोहरत किसी अखबार की मोहताज नहीं

रोज़ आबाद नये शहर किया करती है
शायरी अब किसी दरबार की मोहताज नहीं

मेरे अखलाक की एक धूम है बाज़ारों में
ये वह शै है जो खरीदार की मोहताज नहीं

इसे तूफ़ाँ ही किनारे से लगा देते हैं
मेरी कश्ती किसी पतवार की मोहताज नहीं

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

1. भिक्षा पात्र



रोज़ तारों को नुमाइश में खलल पड़ता है
चाँद पागल है अँधेरे में निकल पड़ता है

एक दीवाना मुसाफ़िर है मेरी आँखों में
वक़्त-बे-वक़्त ठहर जाता है, चल पड़ता है

अपनी ताबीर के चक्कर में मेरा जागता ख़्वाब
रोज़ सूरज की तरह घर से निकल पड़ता है

रोज़ पत्थर की हिमायत में ग़ज़ल कहते हैं
रोज़ शीशों से कोई काम निकल पड़ता है

उसकी याद आई है, साँसों ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता है



अब अपनी रूह के छालों का कुछ हिसाब करूँ
मैं चाहता था चिरागों को आफ़ताब करूँ

बुतों से मुझको इजाज़त अगर कभी मिल जाए
तो शहर भर के ख़ुदाओं को बेनक्राब करूँ

मैं करवटों के नए ज़ाविए लिखूँ शब भर
ये इश्क़ है तो कहाँ ज़िन्दगी अज़ाब करूँ

है मेरे चारों तरफ़ भीड़ गूँगे-बहरों की
किसे ख़तीब¹ बनाऊँ किसे ख़िताब करूँ

उस आदमी को बस एक धुन सवार रहती है
बहुत हसीं है ये दुनिया इसे ख़राब करूँ

ये ज़िन्दगी जो मुझे क़र्ज़दार करती है
कहीं अकेले में मिल जाए तो हिसाब करूँ

¹. उपदेशक



धूप बहुत है मौसम जल थल भेजो ना
बाबा मेरे नाम का बादल भेजो ना

मोलसरी की शाखों पर भी दिए जलें
शाखों का केसरिया आँचल भेजो ना

नन्ही मुन्नी सब चहकारें कहाँ गयीं
मोरों के पैरों की पायल भेजो ना

बस्ती बस्ती दहशत किसने बो दी है
गलियों बाज़ारों की हलचल भेजो ना

सारे मौसम एक उमस के आदी हैं
छाँव की खुशबू, धूप का सन्दल भेजो ना

मैं बस्ती में आखिर किस से बात करूँ
मेरे जैसा कोई पागल भेजो ना



शराब छोड़ दी तुमने कमाल है ठाकुर
मगर ये हाथ में क्या लाल-लाल है ठाकुर

कई मलूल¹ से चेहरे तुम्हारे गाँव में हैं
सुना है तुम को भी इस का मलाल है ठाकुर

खराब हालों का जो हाल था ज़माने से
तुम्हारे फैज़ से अब भी बहाल है ठाकुर

इधर तुम्हारे खज़ानें जवाब देते हैं
उधर हमारी अना का सवाल है ठाकुर

किसी गरीब दुपट्टे का कर्ज है उस पर
तुम्हारे पास जो रेशम की शाल है ठाकुर

दुआ को नन्हे गुलाबों ने हाथ उठाये हैं
बस अब यहीं से तुम्हारा ज़वाल है ठाकुर

¹. दुखी



किसने दस्तक दी ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है

रोशनी ही रोशनी है हर तरफ़
मेरी आँखों में मुनव्वर कौन है

आसमां झुक-झुक के करता है सवाल
आप के क्रद के बराबर कौन है

हम रखेंगे अपने अशकों का हिसाब
पूछने वाला समुन्दर कौन है

सारी दुनिया हैरती है किस लिये
दूर तक मंज़र ब मंज़र कौन है

मुझसे मिलने ही नहीं देता मुझे
क्या पता ये मेरे अन्दर कौन है



हाथ खाली हैं तेरे शहर से जाते जाते
जान होती तो मेरी जान, लुटाते जाते

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तेरे शहर में आते जाते

रेंगने की भी इजाज़त नहीं हमको वरना
हम जिधर जाते नए फूल खिलाते जाते

मुझ को रोने का सलीका भी नहीं है शायद
लोग हँसते हैं मुझे देख के आते जाते

अब के मायूस हुआ यारों को रुखसत करके
जा रहे थे तो कोई ज़ख्म लगाते जाते

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते



खाक से बढ़कर कोई दौलत नई होती
छोटी मोटी बात पे हिजरत नई होती

पहले दीप जलें तो चर्चे होते थे
और अब शहर जलें तो हैरत नई होती

तारीखों की पेशानी पर मुहर लगा
ज़िन्दा रहना कोई करामत नई होती

कोई और ऊठा रखता है छत का बोझ
दीवारों में इतनी ताक़त नई होती

सोच रहा हूं आखिर कब तक जीना है
मर जाता तो इतनी फ़ुरसत नई होती

रोटी की गोलाई नापा करता है
इसीलिये तो घर में बरकत नई होती

हमने ही कुछ लिखना पढ़ना छोड़ दिया
वरना ग़ज़ल की इतनी क़िल्लत नई होती

मिसवाकों¹ से चाँद का चेहरा छूता है
बेटा इतनी सस्ती जन्नत नई होती

बाज़ारों में ढूँढ़ रहा हूँ वह चीज़ें
जिन चीज़ों की कोई कीमत नई होती

कोई क्या दे राय हमारे बारे में
ऐसे वैसों की तो हिम्मत नई होती

-
1. एक खास किस्म के पेड़ की डाली, इस्लामी मान्यता के अनुसार उससे दाँत साफ़ किए जाने चाहिए



हँसते रहते हैं मुसलसल हम तुम
हों न जाएँ कहीं पागल हम तुम

जैसे दरिया किसी दरिया से मिले
आओ! हो जाएँ मुकम्मल हम तुम

उड़ती फिरती है हवाओं में ज़मीं
रेंगते फिरते हैं पैदल हम तुम

प्यास सदियों की लिए आँखों में
देखते रहते हैं बादल हम तुम

धूप हमने ही उगाई है यहाँ
हैं इसी राह का पीपल हम तुम

शहर की हद ही नहीं आती है
काटते रहते हैं जंगल हम तुम



नींदें क्या-क्या ख्वाब दिखाकर गायब हैं
आँखें तो मौजूद हैं मंज़र गायब हैं

बाक़ी जितनी चीज़ें थीं मौजूद हैं सब
नक्शे में दो-चार समुन्दर गायब हैं

जाने ये तस्वीर में किसका लश्कर है
हाथों में शमशीरें हैं सर गायब हैं

ग़ालिब भी है बचपन भी है शहरों में
मजनूं भी है लेकिन पत्थर गायब हैं

धन्धे बाज़ मुजाविर हाकिम बन बैठे
दरगाहों से मस्त क़लन्दर गायब हैं

दरवाज़ों पर दस्तक दें तो कैसे दें
घर वाले मौजूद मगर घर गायब हैं



मौसमों का ख्याल रक्खा करो
कुछ लहू में उबाल रक्खा करो

ज़िन्दगी रोज़ मरती रहती है
ठीक से देख भाल रक्खा करो

सब लकीरों पे छोड़ रक्खा है
आप भी कुछ कमाल रक्खा करो

याद करते रहा करो माज़ी
एक एक पल उजाल रक्खा करो

जाने कब सच का सामना हो जाए
कोई रस्ता निकाल रक्खा करो

ग़ालिबों को रखो दिमागों में
दिल यग़ाना मिसाल रक्खा करो

सुलह करते रहा करो हर पल
दुश्मनों को निढाल रक्खा करो

ख़ाली ख़ाली उदास उदास आँखें
इन में कुछ ख़्वाब पाल रक्खा करो

फिर वह चाकू चला नहीं सकता
हाथ गर्दन में डाल रक्खा करो

लाख सूरज से दोस्ताना हो
चन्द जुगनू भी पाल रक्खा करो



दोस्ती जब किसी से की जाये
दुश्मनों की भी राय ली जाये

मौत का ज़हर है फ़िज़ाओं में
अब कहाँ जाके साँस ली जाये

बस इसी सोच में हूँ डूबा हुआ
ये नदी कैसे पार की जाये

अगले वक़्तों के ज़ख्म भरने लगे
आज फिर कोई भूल की जाये

लफ़्ज़ धरती पे सर पटकते हैं
गुम्बदों में, सदा न दी जाये

बोतलें खोल के तो पी बरसों
आज दिल खोल कर भी पी जाये



कभी दिमाग, कभी दिल, कभी नज़र में रहो
ये सब तुम्हारे ही घर हैं, किसी भी घर में रहो

जला न लो कहीं हमदर्दियों में अपना वजूद
गली में आग लगी हो तो अपने घर में रहो

तुम्हें पता ये चले घर की राहतें क्या हैं
हमारी तरह अगर चार दिन सफ़र में रहो

है अब ये हाल कि दर दर भटकते फिरते हैं
ग़मों से मैंने कहा था कि, मेरे घर में रहो

किसी को ज़ख्म दिये हैं किसी को फूल दिये
बुरी हो, चाहे भली हो, मगर खबर में रहो



ये हादसा तो किसी दिन गुज़रने वाला था
मैं बच भी जाता, तो इक रोज़ मरने वाला था

बुलन्दियों का नशा टूट कर बिखरने लगा
मेरा जहाज़ ज़मीं पर उतरने वाला था

मेरा नसीब, मेरे हाथ कट गये वर्ना
मैं तेरी माँग में सिन्दूर भरने वाला था

ज़मीं से अब के बड़े फ़ासले उगे वर्ना
वो भाई, मुझसे बड़ा प्यार करने वाला था

मेरे चराग़, मेरी शब, मेरी मुंडेरें हैं
मैं कब शरीर हवाओं से डरने वाला था



बढ़ गई है कि घट गई दुनिया
मेरे नक्शे से कट गई दुनिया

तितलियों में समा गए मंज़र
मुट्टियों में सिमट गई दुनिया

अपने रस्ते बनाए खुद मैंने
मेरे रस्ते से हट गई दुनिया

एक नागिन का ज़हर है मुझमें
मुझको डसकर पलट गई दुनिया

कितने खानों में बँट गए हम-तुम
कितने हिस्सों में बँट गई दुनिया

जब भी दुनिया को छोड़ना चाहा
मुझसे आकर लिपट गई दुनिया



सर पर बोझ अँधियारों का है मौला खैर
और सफ़र कुहसारों¹ का है मौला खैर

दुश्मन से तो टक्कर ली है सौ सौ बार
सामना अब के यारों का है मौला खैर

इस दुनिया में तेरे बाद मेरे सर पर
साया रिश्तेदारों का है मौला खैर

दुनिया से बाहर भी निकल कर देख चुके
सब कुछ दुनियादारों का है मौला खैर

और क़यामत मेरे चराग़ों पर टूटी
झगड़ा चाँद सितारों का है मौला खैर

लिख रक्खा है हुजरा² पीर फ़क़ीरों का
और मंज़र दरबारों का है मौला खैर

चौराहों पर वर्दी वाले आ पहुँचे
मौसम फिर त्यौहारों का है मौला खैर
एक खुदा है, एक पयम्बर एक किताब
झगड़ा तो दस्तारों का है मौला खैर
वक़्त मिला तो मस्जिद भी हो आएँगे
बाक़ी काम मज़ारों का है मौला खैर
मैंने अलिफ़ से ये³ तक खुशबू बिखरा दी
लेकिन गाँव गँवारों का है मौला खैर

-
1. पर्वत श्रंखलाएँ
 2. फ़कीर की कुटिया
 3. उर्दू वर्ण लिपि का पहला और आखिरी अक्षर



हौसले ज़िन्दगी के देखते हैं
चलिए कुछ रोज़ जी के देखते हैं

नींद पिछली सदी से ज़ख्मी है
ख्वाब अगली सदी के देखते हैं

रोज़ हम इस अँधेरी धुँध के पार
काफ़िले रोशनी के देखते हैं

धूप इतनी कराहती क्यों है
छाँव के ज़ख्म सी के देखते हैं

टकटकी बाँध ली है आँखों ने
रास्ते वापसी के देखते हैं

बारिशों से तो प्यास बुझती नहीं
आइए ज़हर पी के देखते हैं



दरबदर जो थे वो दीवारों के मालिक हो गये
मेरे सब दरबान, दरबारों के मालिक हो गये

लफ़्ज़ गूंगे हो चुके तहरीर अन्धी हो चुकी
जितने मुखबिर थे वह अखबारों के मालिक हो गये

लाल सूरज आसमां से घर की छत पर आ गया
जितने थे बेकार सब कारों के मालिक हो गये

और अपने घर में हम बैठे रहे मशअल बक़्र¹
चन्द जुगनू चाँद और तारों के मालिक हो गये

देखते ही देखते कितनी दुकाने खुल गयीं
बिकने आए थे वह बाज़ारों के मालिक हो गये

सर बक़्र थे तो सरों से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वह दस्तारों के मालिक हो गये

¹. मशाल की रोशनी में



ज़िन्दगी उम्र से बड़ी तो नहीं
ये कहीं मौत की घड़ी तो नहीं

ये अलग बात हम भटक जाएँ
वैसे दुनिया बहुत बड़ी तो नहीं

टूट सकता है ये तअल्लुक भी
इश्क़ है कोई हथकड़ी तो नहीं

आते-आते ही आएगी मंज़िल
रास्ते में कहीं पड़ी तो नहीं

एक खटका सा है बिछड़ने का
ये मुलाक़ात की घड़ी तो नहीं

एक जंगल है दूर-दूर तलक
ये मेरे शहर की कड़ी तो नहीं



पहली शर्त जुदाई है
इश्क़ बड़ा हरजाई है

गुम हैं होश हवाओं के
किसकी खुशबू आई है

ख्वाब करीबी रिश्तेदार
लेकिन नींद पराई है

चाँद तराशे सारी उम्र
तब कुछ धूप कमाई है

मैं बिछड़ा हूँ डाली से
दुनिया क्यों मुरझाई है

दिल पर किसने दस्तक दी
तुम हो या तन्हाई है

दरिया दरिया नाप चुके
मुट्ठी भर गहराई है

सूरज टूट के बिखरा था
रात ने ठोकर खाई है

कोई मसीहा क्या जाने
जख्म है या गहराई है

वाह रे पागल वाह रे दिल
अच्छी किस्मत पाई है



हों लाख ज़ुल्म मगर बद-दुआ नहीं देंगे
ज़मीन माँ है ज़मीं को दगा नहीं देंगे

हमें तो सिर्फ़ जगाना है सोने वालों को
जो दर खुला है वहाँ हम सदा नहीं देंगे

रिवायतों की सफ़हें तोड़ कर बढ़ो, वर्ना
जो तुमसे आगे हैं वो रास्ता नहीं देंगे

ये हमने आज से तय कर लिया कि हम तुझको
करेंगे याद कि जब तक भुला नहीं देंगे

शराब पी के बड़े तजुर्बे हुए हैं हमें
शरीफ़ लोगों को हम मशविरा नहीं देंगे



जाके ये कहदे कोई शौलों से, चिंगारी से
फूल इस बार खिले हैं बड़ी तैयारी से

भाई चारे से, मोहब्बत से, वफ़ादारी से
ज़िन्दगी हमने गुज़ारी है, अदाकारी से

ज़हन में जब भी तेरे ख़त की इबारत चमकी
एक खुशबू सी निकलने लगी अलमारी से

शाहज़ादे से मुलाक़ात तो नामुमकिन है
चलिये, आ जाते हैं मिलकर किसी दरबारी से

अपनी हर साँस को नीलाम किया है मैंने
लोग आसान हुये हैं बड़ी दुशवारी से



दोस्त है तो मेरा कहा भी मान
मुझसे शिकवा भी कर, बुरा भी मान

दिल को सबसे बड़ा हरीफ़¹ समझ
और इसी संग को खुदा भी मान

मैं कभी सच भी बोल देता हूँ
गाहे गाहे, मेरा कहा भी मान

याद कर, देवताओं के अवतार
हम फ़क़ीरों का सिलसिला भी मान

कागज़ों की खमोशियाँ भी पढ़
एक एक हर्फ़ को सदा भी मान

आज़माईश में क्या बिगड़ता है
फ़र्ज़ कर, और मुझे भला भी मान

ग़म से बचने की सोच कुछ तरकीब
और इस ग़म को आसरा भी मान

¹. विरोधी



मुझ में कितने राज़ हैं बतलाऊँ क्या?
बन्द एक मुद्दत से हूँ खुल जाऊँ क्या?

आजिज़ी, मिन्नत, खुशामद, इल्तिजा
और मैं क्या-क्या करूँ मर जाऊँ क्या?

कल यहाँ मैं था जहाँ तुम आज हो
मैं तुम्हारी ही तरह इतराऊँ क्या?

तेरे जलसे मैं तेरा परचम लिये
सैकड़ों लाशें भी हैं गिनवाऊँ क्या?

एक पत्थर है वह मेरी राह का
गर न ठुकराऊँ तो ठोकर खाऊँ क्या?

फिर जगाया तूने सोये शेर को
फिर वही लहजा दराज़ी! आऊँ क्या?



बूढ़े हुए यहाँ कई अय्याश बम्बई
तू आज भी जवान है शाबाश बम्बई

पूछूँ के मेरे बच्चों के ख्वाबों का क्या हुआ
मिल जाए बम्बई में कहीं काश बम्बई

दिल बैठते हैं दौड़ते घोड़ों के साथ-साथ
सोने की फ़सल बोती है क़लाश¹ बम्बई

दो गज़ ज़मीन भी न मिली दफ़्न के लिये
घर में पड़ी हुई है तेरी लाश बम्बई

हर शख्स आ के जीत न पायेगा बाज़ियाँ
उलटे छपे हुए हैं तेरे ताश बम्बई

इस शहर में ज़मीन है महँगी बहुत मगर
घर की छतों पे रखती है आकाश बम्बई

¹. कंगाल



जितने अपने थे सब पराए थे
हम हवा को गले लगाए थे

जितनी क्रसमें थी सब थीं शर्मिदा
जितने वादे थे सर झुकाए थे

जितने आँसू थे सब थे बेगाने
जितने मेहमाँ थे बिन बुलाए थे

सब किताबें पढ़ी पढ़ाई थीं
सारे क्रिस्से सुने सुनाए थे

एक बन्जर ज़मीं के सीने में
मैंने कुछ आसमां उगाए थे

वरना औक्रात क्या थी सायों की
धूप ने हौसले बढ़ाए थे

सिर्फ़ दो घूंट प्यास की खातिर
उम्र भर धूप में नहाए थे

हाशिए पर खड़े हुए हैं हम
हम ने खुद हाशिए बनाए थे

मैं अकेला उदास बैठा था
शाम ने कहकरहे लगाए थे

है गलत उस को बेवफ़ा कहना
हम कहाँ के धुले धुलाए थे

आज कांटो भरा मुक़द्दर है
हम ने गुल भी बहुत खिलाए थे



सवाल घर नहीं बुनियाद पर उठाया है
हमारे पाँव की मिट्टी ने सर उठाया है

हमेशा सर पे रही इक चट्टान रिश्तों की
यह बोझ वो है जिसे उम्र भर उठाया है

मेरी गुलेल के पत्थर का कारनामा था
मगर यह कौन है जिसने समर उठाया है

यही ज़मीन में दबाएगा एक दिन हम को
यह आसमान जिसे दोश पर उठाया है

बुलन्दियों को पता चल गया कि फिर मैंने
हवा का टूटा हुआ एक पर उठाया है

महाबली से बगावत बहुत ज़रूरी थी
क्रदम यह हम ने समझ सोच कर उठाया है



हमें दिन रात मरना चाहिए था
मियाँ कुछ कर गुज़रना चाहिए था

बहुत ही खूबसूरत है यह दुनिया
यहाँ कुछ दिन ठहरना चाहिए था

मुझे तूने किनारे से है जाना
समन्दर में उतरना चाहिए था

यहाँ सदियों से तारीकी जमी है
मेरी शब को सहरना चाहिए था

अकेली रात बिस्तर पर पड़ी है
मुझे इस दिन से डरना चाहिए था

डुबो कर मुझ को खुश होता है दरिया
उसे तो डूब मरना चाहिए था

किसी से बेवफाई की है मैंने
मुझे इकरार करना चाहिए था

यह देखो किरचियाँ हैं आइनों की
सलीक़े से सँवरना चाहिए था

किसी दिन उसकी महफ़िल में पहुँच कर
गुलों में रंग भरना चाहिए था

फ़लक पर तब्सिरा करने से पहले
ज़मीं का क़र्ज़ उतरना चाहिए था



बैठे बैठे कोई ख्याल आया
ज़िन्दा रहने का फिर सवाल आया

कौन दरयाओं का हिसाब रखे
नेकियां, नेकियों में डाल आया

ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं
ज़िन्दगी भर न यह कमाल आया

झूट बोला है कोई आइना
वरना पत्थर में कैसे बाल आया

वह जो दो गज़ ज़मीं थी मेरे नाम
आसमां की तरफ़ उछाल आया

क्यों ये सैलाब सा है आँखों में
मुस्कुराए थे हम, ख्याल आया



मौसम की मनमानी है
आँखों आँखों पानी है

साया साया लिख डालो
दुनिया धूप कहानी है

सब पर हँसते रहते हैं
फूलों की नादानी है

हाय ये दुनिया! हाय ये लोग
हाय! यह सब कुछ फ़ानी है

साथ इक दरिया रख लेना
रस्ता रेगिस्तानी है

कितने सपने देख लिए
आँखों को हैरानी है

दिल वाले अब कम कम हैं
वैसे क़ौम पुरानी है

बारिश, दरिया, सागर, ओस
आँसू पहला पानी है

तुझ को भूले बैठे हैं
क्या यह कम कुरबानी है

दरिया हम से आँख मिला
देखें कितना पानी है



यहाँ कब थी जहाँ ले आई दुनिया
यह दुनिया को कहाँ ले आई दुनिया

ज़मीं को आसमानों से मिला कर
ज़मीं पर आसमां ले आई दुनिया

मैं खुद से बात करना चाहता था
खुदा को दरमियाँ ले आई दुनिया

चिरागों की लवें सहमी हुई हैं
सुना है आँधियाँ ले आई दुनिया

जहाँ मैं था वहाँ दुनिया कहाँ थी
वहाँ मैं हूँ जहाँ ले आई दुनिया

तवक्क़ो¹ हमने की थी शाख़े-गुल की
मगर तीरो कमां ले आई दुनिया

¹. उम्मीद



अन्दर का ज़हर चूम लिया धुल के आ गये
कितने शरीफ़ लोग थे सब खुल के आ गये

सूरज से जंग जीतने निकले थे बेवकूफ़
सारे सिपाही मोम के थे घुल के आ गये

मस्जिद में दूर-दूर कोई दूसरा न था
हम आज अपने आप से मिल जुल के आ गये

नींदों से जंग होती रहेगी तमाम उम्र
आँखों में बन्द ख़्वाब अगर खुल के आ गये

अन्जाने साये फिरने लगे हैं इधर-उधर
मौसम हमारे शहर में काबुल के आ गये



कैसा नारा कैसा क्रौल अल्लाह बोल
अभी बदलता है माहौल अल्लाह बोल

कैसे साथी कैसे यार सब मक्कार
सबकी नीयत डावाँ डोल अल्लाह बोल

जैसा गाहक वैसा माल दे कर टाल
काग़ज़ में अंगारे तौल अल्लाह बोल

इन्सानों से इन्सानों तक एक सदा
क्या तातारी क्या मंगोल अल्लाह बोल

साँसों पर लिख रब का नाम सुबह शाम
यही वज़ीफ़ा है अनमोल अल्लाह बोल

सच्चाई का लेकर जाप धरती नाप
दिल्ली हो या आसनसोल अल्लाह बोल

दल्लालों से नाता तोड़ सब को छोड़
भेज कमीनों पर लाहौल अल्लाह बोल

हर चेहरे के सामने रख दे आईना
नोच ले हर चेहरे का खोल अल्लाह बोल

शाख-ए-सहर पर महके फूल अज़ानों के
फैंक रज़ाई आँखें खोल अल्लाह बोल



मौक़ा है इस बार रोज़ मना त्यौहार अल्लाह बादशाह
अपनी है सरकार सातों दिन इतवार अल्लाह बादशाह

तेरी ऊँची ज़ात, लश्कर तेरे साथ, तेरे सौ सौ हाथ
तू भी है तैयार हम भी हैं तैयार अल्लाह बादशाह

सबकी अपनी फौज, ये मस्ती वह मौज, सब हैं राजा भोज
शेख, मुग़ल, अंसार, सब ज़ेहनी बीमार अल्लाह बादशाह

दिल्ली ता लाहौर, जंगल चारों ओर, जिसको देखो चोर
काबुल और कंधार तोड़ दे ये दीवार अल्लाह बादशाह

फ़र्क़ न इनके बीच, ये बन्दर वह रीछ, सबकी रस्सी खींच
सारे है मक्कार, सबको ठोकर मार अल्लाह बादशाह

पढ़े लिखे बेकार, दर दर हैं फ़नकार, आलिम फ़ाजिल ख़वार
जाहिल, ढोर, गंवार, क़ौम के हैं सरदार अल्लाह बादशाह



पुराने दांव पर हर दिन नये आँसू लगाता है
वह अब भी एक फटे रूमाल पर खुशबू लगाता है

उसे कह दो के ये ऊँचाईयाँ मुश्किल से मिलती हैं
वह सूरज के सफ़र में मोम के बाजू लगाता है

मैं काली रात के तेज़ाब से सूरज बनाता हूँ
मेरी चादर में ये पेवन्द एक जुगनू लगाता है

यहाँ लक्ष्मण की रेखा है न सीता है मगर फिर भी
बहुत फेरे हमारे घर के एक साधू लगाता है

न जाने ये अनोखा फ़र्क़ उसमें किस तरह आया
वह अब कालर में फूलों की जगह बिच्छू लगाता है

अन्धेरे और उजाले में ये समझौता ज़रूरी है
निशाना मैं लगाता हूँ ठिकाने तू लगाता है



एक दो आसमान और सही
और थोड़ी उड़ान और सही

शहर आबाद हों दरिन्दों से
जंगलों में मचान और सही

धूप को नींद आ भी सकती है
छाँव की दास्तान और सही

बारिशों हौंसले बुलन्द रहें
मेरा कच्चा मकान और सही

ये पसीना तो अपनी पूंजी है
चन्द मुट्ठी लगान और सही

गालियों से नवाज़ता है मुझे
एक अहले-जुबान और सही

शहर में अमन है कई दिन से
कोई ताज़ा बयान और सही



आँख में पानी रखो होटों पे चिंगारी रखो
जिन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो

राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं हैं मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र जारी रखो

एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तो
दोस्ताना ज़िन्दगी से मौत से यारी रखो

आते-जाते पल ये कहते हैं हमारे कान में
कूच का एलान होने को है तैयारी रखो

ये ज़रूरी है कि आँखों का भरम क़ायम रहे
नींद रखो या न रखो ख़्वाब मेयारी¹ रखो

ये हवाएँ उड़ न जाएँ ले के काग़ज़ का बदन
दोस्तों मुझ पर कोई पत्थर ज़रा भारी रखो

ले तो आए शायरी बाज़ार में राहत मियाँ
क्या ज़रूरी है के लहजे को भी बाज़ारी रखो

¹. गुणवत्तापूर्ण



चरागों को उछाला जा रहा है
हवा पे रोब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
मगर सिक्का उछाला जा रहा है

वो देखो मैक्रदे के रास्ते में
कोई अल्लाह वाला जा रहा है

थे पहले ही कई साँप आस्तीं में
अब एक बिच्छू भी पाला जा रहा है

मेरे झूठे गिलासों की चखा कर
बहकतों को सँभाला जा रहा है

हमीं बुनियाद का पत्थर हैं लेकिन
हमें घर से निकाला जा रहा है

जनाज़े पर मेरे लिख देना यारों
मुहब्बत करने वाला जा रहा है



इससे पहले के हवा शोर मचाने लग जाए
मेरे अल्लाह मेरी खाक ठिकाने लग जाए

घेरे रहते हैं कई ख्वाब मेरी आँखों को
काश कुछ देर मुझे नींद भी आने लग जाए

तो ज़रूरी है कि मैं मिस्र से हिजरत कर जाऊँ
जब ज़ुलेखा ही मेरे दाम घटाने लग जाए

साल भर ईद का रस्ता नहीं देखा जाता
वह गले मुझसे किसी और बहाने लग जाए

मेरी कोशिश है कि हर शाम ये ढलता सूरज
शब की दहलीज़ पे एक शमा जलाने लग जाए



खुश्क दरियाओं में हल्की सी खानी और है
रेत के नीचे अभी थोड़ा सा पानी और है

जो भी मिलता है उसे अपना समझ लेता हूँ मैं
एक बीमारी मुझे ये खानदानी और है

बोरिये पे बैठिये कुल्हड़ में पानी पीजिये
हम कलन्दर हैं हमारी मेज़बानी और है

एक कहानी खत्म करके वह बहुत है मुतमईन
भूल बैठा है कि आगे एक कहानी और है

कौन फिर पूछेगा गूंगे मुनसिफ़ों¹ से खैरियत
एक ले-दे के हमारी बेज़बानी और है

एक दिन इस शहर की कीमत लगाई जाएगी
गाँव में थोड़ी बहुत खेती-किसानी और है

¹. न्यायाधीश



न हमसफ़र न किसी हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा हमीं से निकलेगा

इसी जगह पे वो भूका फ़कीर रहता था
तलाश कीजै खज़ाना यहीं से निकलेगा

मैं जानता था कि ज़हरीला साँप बनबन कर
तेरा खुलूस मेरी आस्तीं से निकलेगा

बुजुर्ग कहते थे इक रोज़ आयेगा एक दिन
जहाँ पे डूबेगा सूरज वहीं से निकलेगा

गुज़िश्ता साल के ज़ख्मों हरे भरे रहना
जुलूस अबके बरस भी यहीं से निकलेगा

ये राज़ जानना चाहो तो मीर को पढ़ लो
फिर एक 'हाँ' का इशारा 'नहीं' से निकलेगा



मुझ पर नहीं उठे थे तो उठकर कहाँ गये
मैं शहर में नहीं था, तो पत्थर कहाँ गये

कितने ही लोग प्यास की शिद्दत से मर चुके
मैं सोचता रहा, कि समन्दर कहाँ गये

मैं खुद ही मेज़बान हूँ मेहमान भी हूँ खुद
सब लोग मुझको घर पे बुलाकर कहाँ गये

सैय्याद ने रिहाइ तो दे दी मुझे मगर
मुझको खबर नहीं कि मेरे पर कहाँ गये

पिछले दिनों की आँधी में गुम्बद तो गिर चुका
"अल्लाह जाने सारे कबूतर कहाँ गये"



सिसकती रुत को महकता गुलाब कर दूँगा
मैं इस बहार में सबका हिसाब कर दूँगा

मैं इन्तज़ार में हूँ तू कोई सवाल तो कर
यक़ीन रख मैं तुझे लाजवाब कर दूँगा

हज़ार पदों में खुद को छुपा के बैठ मगर
तुझे कभी न कभी बेनक्राब कर दूँगा

मुझे भरोसा है अपने लहू के क़तरों पर
मैं नेज़े नेज़े को शाख़े गुलाब कर दूँगा

मुझे यक़ीन है कि महफ़िल की रौशनी हूँ मैं
उन्हें ये खौफ़ कि महफ़िल ख़राब कर दूँगा

मुझे गिलास के अन्दर ही क़ैद रख वरना
मैं सारे शहर का पानी शराब कर दूँगा

महाजनों से कहो थोड़ा इन्तिज़ार करें
शराब खाने से आकर हिसाब कर दूँगा



यही वो कच्चे मकाँ हैं भिखारियों वाले
यहाँ उतर के चलेंगे सवारियों वाले

कभी मचान से नीचे उतर के बात करो
बहुत पुराने है क्रिस्से शिकारियों वाले

मैं जानता हूँ कि मैं सल्तनत का मालिक हूँ
मगर बदन पे हैं कपड़े भिखारियों वाले

ज़मीं पे रेंगते चलने की हमको आदत है
हमारे साथ न आयें सवारियों वाले

अदब कहाँ का कि हर रात देखता हूँ मैं
मुशायरों में तमाशे मदारियों वाले

मेरी बहार मेरे घर के फूलदान में है
खिले हैं फूल हरी-पीली धारियों वाले



अपने होने का हम इस तरह पता देते थे
खाक, मुट्ठी में उठाते थे, उड़ा देते थे

बेसमर जान के हम काट चुके हैं जिनको
याद आते हैं, कि बेचारे हवा देते थे

अब से पहले के जो क्रांतिल थे, बहुत अच्छे थे
क्रल्ल से पहले, वो पानी तो पिला देते थे

उसकी महफ़िल में वही सच था, वो जो कुछ भी कहे
हम भी गूँगों की तरह हाथ उठा देते थे

अब मेरे हाल पे शर्मिन्दा हुए हैं वो बुजुर्ग
जो मुझे फूलने फलने की दुआ देते थे



मेरे खुलूस की गहराई से नहीं मिलते
ये झूटे लोग हैं सच्चाई से नहीं मिलते

वो सबसे मिलते हुए हमसे मिलने आता है
हम इस तरह किसी हरजाई से नहीं मिलते

पुराने ज़ख्म हैं काफ़ी शुमार करने को
सो अब किसी भी शनासाई¹ से नहीं मिलते

मुहब्बतों का सबक दे रहे हैं दुनिया को
जो ईद अपने सगे भाई से नहीं मिलते

हैं साथ साथ मगर फ़र्क है मिज़ाजों का
मेरे क़दम मेरी परछाई से नहीं मिलते...

¹. परिचित



खानकाहों में, हरम में, न शिवालों में मिले
वो फ़रिश्ते जो किताबों के हवालों में मिले

चाँद को हमने कभी ग़ौर से देखा ही नहीं
उससे कहना कि कभी दिन के उजालों में मिले

मुस्कुराहट की सलीबों पे चढ़ा दो आँसू
ज़िन्दगी ऐसी गुज़ारो कि मिसालों में मिले

फिर वही ज़ख़्म उभर आए जो भर आए थे
आज कुछ ख़त मुझे बोसीदा¹ रिसालों² में मिले

मेरी ग़ज़लों ने ये एजाज़ दिया है मुझको
मेरे दुश्मन भी मेरे चाहने वालों में मिले

1. पुराने

2. किताबें, पत्रिकाएँ



मेरे सूरज को ठण्डा कर रहा है
समन्दर धीरे-धीरे मर रहा है

जमीं हैं सोच कर क़दमों की चापें
न जाने कौन पीछा कर रहा है

मैं अकसर बादलों में देखता हूँ
कोई बूढ़ा इबादत कर रहा है

अब उसकी ठोकरी में ताज होंगे
वो सारी उम्र नंगे सर रहा है

मेरे सीने से गुज़री रेल गाड़ी
ज़ुदाई का अजब मंज़र रहा है

बड़ा ताजिर बना फिरता है सूरज
मेरे ख्वाबों का सौदा कर रहा है

हो फ़ुर्सत तो हमारे दुःख भी बाँटे
ज़रा देखो खुदा क्या कर रहा है



कहाँ गुज़ारी है सांसें जवाब माँगेगा
वो जब भी हमसे मिलेगा हिसाब माँगेगा

दिया न छीन मेरे हाथ से कि दिल मेरा
मचल गया तो अभी आफ़ताब माँगेगा

जो हँस रहा है मेरे शेरों पे वही इक दिन
कुतुब फ़रोश¹ से मेरी किताब माँगेगा

शिकस्त खा ही गया मेरा हातिमाना मिज़ाज
किसे ख़बर थी कि वो मुझसे ख़्वाब माँगेगा

शरीफ़ लोग तो मस्जिद में छुप के बैठ गये
वो जानते थे कि राहत शराब माँगेगा

¹. किताब की दुकान वाला



सारी बस्ती क़दमों में है, ये भी इक फ़नकारी है
वर्ना बदन को छोड़ के अपना जो कुछ है सरकारी है

कालिज के सब लड़के चुप हैं काग़ज़ की इक नाव लिये
चारों तरफ़ दरिया की सूरत, फैली हुई बेकारी है

फूलों की खुशबू लूटी है, तितली के पर नोचे हैं
ये रहज़न का काम नहीं है, रहबर की मक्कारी है

इक इक क़तरा तौल के देगा, इक इक पैसा मोल का लेगा
अब साक़ी ग़ज़लों का नहीं है अब साक़ी व्योपारी है

हमने दो सौ साल से घर में तोते पाल के रक्खे हैं
मीर तक्की के शेर सुनाना कौन बड़ी फ़नकारी है

अब फिरते हैं हम रिश्तों के रंग बिरंगे ज़ख़्म लिये
सब से हँसकर मिलना जुलना बहुत बड़ी बीमारी है

दौलत-बाज़ू, नकहत-गेसू, शोहरत-माथा, ग़ीबत-होंठ
इस औरत से बच कर रहना यह औरत बाज़ारी है

कश्ती पर आँच आ जाये तो हाथ कलम करवा देना
लाओ मुझे पतवारें दे दो मेरी ज़िम्मेदारी है



चाँद इक टूटा हुआ टुकड़ा मेरे जाम का है
ये मेरा क़ौल नहीं, हज़रते खय्याम का है

हमसे पूछो कि ग़ज़ल माँगती है कितना लहू
सब समझते हैं ये धन्धा बड़े आराम का है

प्यास अगर मेरी बुझा दे तो मैं जानूँ वर्ना
तू समन्दर है तो होगा मेरे किस काम का है

अब तेरी बारी है, आईने बचाले अपने
मेरे हाथों में जो पत्थर है तेरे नाम का है

तेरी जलती हुई शम्ओं की लवें क्या देखूँ
मेरी आँखों में तो मंज़र अभी आसाम का है



पुराने लोगों के क्रिस्से निकालता क्यों है
भलाई करके, समन्दर में डालता क्यों है

ये उससे कह दो कि कागज़ के पर भी काफ़ी हैं
वो रोज़ मुझको हवा में उछालता क्यों है

कहीं मिलेगा तो इक बात उससे पूछूँगा
वो मार डालेगा मुझको तो पालता क्यों है

सफ़ेद दूध, सियाह ज़हर हो, कि सुख़ शराब
मैं पी चुका हूँ तो सागर खँगालता क्यों है

यहाँ तो चारों तरफ़ कोयले की खानें हैं
बचा न पायेगा कपड़े सँभालता क्यों है

मेरी ग़ज़ल को ग़ज़ल ही समझ तो अच्छा है
मेरी ग़ज़ल से कोई रुख़ निकालता क्यों है

यूँ लम्हा लम्हा सहारों का क़र्ज़दार न कर
गिराना है तो गिरा दे सँभालता क्यों है



सफ़र की हद है वहाँ तक के कुछ निशान रहे
चले चलो कि जहाँ तक ये आसमान रहे

ये क्या कि, आगे बढ़े और आ गई मंज़िल
मज़ा तो जब है के पैरों में कुछ थकान रहे

मुझे ज़मीन की गहराइयों ने दाब लिया
मैं चाहता था मेरे सर पे आसमान रहे

अब अपने बीच मरासिम¹ नहीं, अदावत² है
मगर ये बात हमारे ही दरमियान रहे

वो इक सवाल है, फिर उसका सामना होगा
दुआ करो कि सलामत मेरी ज़बान रहे

¹. रिश्ते

². दुश्मनी



इसको सामाने सफ़र जान ये जुगनू रख ले
राह में तीरगी होगी, मेरे आँसू रख ले

तू जो चाहे तो तेरा झूठ भी बिक सकता है
शर्त इतनी है कि सोने का तराजू रख ले

वक़्त किस तरह गुज़रता है ये अन्दाज़ा लगा
अपनी मुठ्ठी में ज़रा देर को बालू रख ले

वो कोई जिस्म नहीं है कि उसे छू भी सके
हाँ, अगर नाम ही रखना है, तो खुशबू रख ले

मेरी ख़्वाहिश है कि, आँगन में न दीवार उठे
मेरे भाई मेरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले



ग़ज़ल की क़ब्र पे आँसू बहा के लौट आया
मुशायरों में लतीफ़े सुना के लौट आया

जिहालतों¹ के अँधेरे मिटा के लौट आया
मैं आज सारी किताबें जला के लौट आया

सफ़र में जितना मज़ा है, वो मंज़िलों पे कहाँ
मैं इस दफ़ा तो बहुत दूर जाके लौट आया

ये सोच कर कि वो तन्हाई साथ लायेगा
मैं छत पे बैठे परिन्दे उड़ा के लौट आया

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

ख़बर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पे ठोकर लगा के लौट आया

वो चाहता था कि कासा² ख़रीद ले मेरा
मैं उसके ताज की क़्रीमत लगा के लौट आया

¹.अज्ञान

².भिक्षा पात्र



शहरों शहरों गाँव का आँगन याद आया
झूठे दोस्त, और सच्चा दुश्मन याद आया

पीली पीली फ़सलें देख के खेतों में
अपने घर का खाली बर्तन याद आया

गिरजा में इक मोम की मरियम रक्खी थी
माँ की गोद में गुज़रा बचपन याद आया

देख के रंग महलों की रंगीं दीवारें
मुझको अपना सूना आँगन याद आया

जंगल सर पर रख के सारा दिन भटके
रात हुई तो राज-सिंहासन याद आया



चाँद के माथे पे सूरज का नज़ारा पढ़ लिया
मीर को हमने सवेरे तक दुबारा पढ़ लिया

अपनी कागज़ की हवेली भीगने से बच गयी
अक़्लमंदी की, के मौसम का इशारा पढ़ लिया

मौजें लिखती जा रही थीं बादबानों पर नसीब
मैंने घबराहट में तूफ़ाँ को किनारा पढ़ लिया

सो रही थी उजली पोशाकों में काली आत्मा
कम समझ लोगों ने ज़रों को सितारा पढ़ लिया

मज़हबी लोगों में उठना बैठना आसाँ नहीं
एहतियातन हमने भी पहला सिपारा पढ़ लिया



मेरी तकदीर में है, मेरे हवाले होंगे
वक़्त के हाथ में गर ज़हर के प्याले होंगे

मस्ज़िदें होंगी, कलीसा, न शिवाले होंगे
इतने नज़दीक तेरे चाहने वाले होंगे

मैं अगर वक़्त का सुक़रात भी बन जाऊँ तो क्या
मेरे हिस्से में वही ज़हर के प्याले होंगे

जिन चराग़ों से तआस्सुब¹ का धुआँ उठता है
उन चराग़ों को बुझा दो तो उजाले होंगे

राहबर मैंने समझ रक्खा था जिनको राहत
क्या ख़बर थी कि वही लूटने वाले होंगे

¹. सांप्रदायिकता



मेरे अशकों ने कई आँखों को जल थल कर दिया
एक पागल ने कई लोगों को पागल कर दिया

अपनी पलकों पर सजाकर मेरे आँसू आपने
रास्ते की धूल को आँखों का काजल कर दिया

मैंने दिल देकर उसे की थी वफ़ा की इब्तिदा
उसने धोका दे के ये क़िस्सा मुकम्मल कर दिया

ये हवाएँ कब निगाहें फेर लें किसको ख़बर
शोहरतों का तख़्त जब टूटा तो पैदल कर दिया

देवताओं और ख़ुदाओं की लगाई आग ने
देखते ही देखते बस्ती को जंगल कर दिया

शहर में चर्चा है आख़िर ऐसी लड़की कौन है
जिसने अच्छे ख़ासे इक शार्डर को पागल कर दिया

ज़ब्त ने यूँ तो बहुत से पुल बनाये थे मगर
अब की बारिश ने तो, सब कमरों को जल थल कर दिया



वो एक तीर है, जिसका शिकार मैं भी हूँ
मैं एक हर्फ़ सही, दिल के पार मैं भी हूँ

वो सामने रहा दरिया का दूसरा साहिल
अगर जहाज़ न डूबा तो पार मैं भी हूँ

यहाँ तो मौत का सैलाब आता रहता है
बहुत बचा था, मगर अबकी बार मैं भी हूँ

न जाने किस के मुक़द्दर में वो लिखा होगा
मगर ये सच है कि उम्मीदवार मैं भी हूँ

किसे ख़बर है कि नीले समन्दरों की तरह
बहुत दिनों से बहुत बेक्रार मैं भी हूँ



रिश्तों की धूप छाँव से आज़ाद हो गये
अब तो हमें भी सारे सबक़ याद हो गये

आबादियों में होते हैं बर्बाद कितने लोग
हम देखने गये थे तो बर्बाद हो गये

मैं परबतों से लड़ता रहा और चन्द लोग
गीली ज़मीन खोद के फ़रहाद हो गये

बैठे हुए हैं क्रीमती सोफों पे भेड़िये
जंगल के लोग शहर में आबाद हो गये

लफ़्ज़ों के हेर फेर का धन्धा भी ख़ूब है
जाहिल हमारे शहर के उस्ताद हो गये



आँख में जितने भी आँसू थे ठिकाने लग गये
आते आते इक तबस्सुम तक ज़माने लग गये

अब तो सेहरा और समन्दर के लिये हैं बारिशें
खेतियाँ जितनी थीं उन पर कारखाने लग गये

आपसे इक बात कहनी है, बस इतनी बात थी
मुझको इतनी बात कहने में ज़माने लग गये

तेरी पलकों के घने सायों का मौसम खूब है
धूप में निकला तो सर पर शामियाने लग गये

बन्द कमरों की उमस अपना मुक़द्दर बन गई
छत पे पहुँचा था कि बादल सर उठाने लग गये



आँसू-आँसू साज़िश होती रहती है
हर मौसम में बारिश होती रहती है

हम लोगों से झुक कर मिलते रहते हैं
क्रामत¹ की पैमाइश² होती रहती है

काई जमी रहती है रूहों पर लेकिन
जिस्मों की आराइश³ होती रहती है

उजले गुम्बद काले फ़ीते बाँधे हैं
जाने क्या-क्या साज़िश होती रहती है

आती जाती चिड़ियाँ रोशनदानों में
घर आँगन की ख्वाहिश होती रहती है

घर के बाहर सूरज आग उगलता है
घर के अन्दर बारिश होती रहती है

मुझसे दिल का हाल कोई कब पूछता है
ग़ज़लों की फ़रमाइश होती रहती है

1. ऊँचाई

2. माप

3. सजावट



झूठी बुलन्दियों का धुआँ पार करके आ
क़द नाँपना है मेरा तो छत से उतर के आ

इस पार मुन्तज़िर हैं तेरी ख़ुश नसीबियाँ
लेकिन ये शर्त है के नदी पार करके आ

कुछ दूर मैं भी दोश ए हवा¹ पर सफ़र करूँ
कुछ दूर तू भी ख़ाक की सूरत बिखर के आ

मैं धूल में अटा हूँ, मगर तुझको क्या हुआ
आईना देख, जा ज़रा घर जा सँवर के आ

सोने का रथ फ़क़ीर के घर तक न आयेगा
कुछ माँगना है हमसे तो पैदल उतर के आ

¹. हवा के साथ



सारी फ़ितरत तो नक्राबों में छिपा रक्खी थी
सिर्फ़ तस्वीर उजालों में लगा रक्खी थी

हम दिया रख के चले आए हैं देखें क्या हो
उस दरीचे पे तो पहले से हवा रक्खी थी

ज़िन्दगी तेरी क़सम खाके जिन्हें पीते रहे
उन चमकदार गिलासों में क़ज़ा रक्खी थी

मेरी गरदन पे थी तलवार मेरे दुश्मन की
मेरे बाजू पे मेरी माँ की दुआ रक्खी थी

शहर में रात मेरा ताज़ियती¹ जलसा था
सब नमाज़ी थे मगर सबने लगा रक्खी थी

¹. शोक सभा



फूल जैसे मखमली तलवों में छाले कर दिये
गोरे सूरज ने हज़ारों जिस्म काले कर दिये

प्यास अब कैसे बुझेगी हमने खुद ही भूल से
मयक़दे कमजर्फ़ लोगों के हवाले कर दिये

देखकर तुझको कोई मंज़र न देखा उम्र भर
इक उजाले ने मेरी आँखों में जाले कर दिये

रौशनी के देवता को पूजता था कल तलक
आज घर की खिड़कियों के काँच काले कर दिये

ज़िन्दगी का कोई भी तोहफ़ा नहीं है मेरे पास
खून के आँसू तो ग़ज़लों के हवाले कर दिये



कोई मौसम हो, दुख सुख में गुज़ारा कौन करता है
परिन्दों की तरह, सब कुछ गँवारा कौन करता है

वज़ीरों से सिफ़ारिश की तमन्ना हम नहीं करते
हमें मालूम है ज़र्रे को तारा कौन करता है

ये मुझ तक आते आते हादसे क्यों लौट जाते हैं
मेरे बारे में ये, सोचा विचारा कौन करता है

घरों की राख फिर देखेंगे पहले देखना ये है
घरों को फूँक देने का इशारा कौन करता है

जिसे दुनिया कहा जाता है कोठे की तवाइफ़ है
इशारा किसको करती है नज़ारा कौन करता है



वही दुख सुख, उसी मंज़र की तरह लगता है
मयक़दे में भी मुझे घर की तरह लगता है

तू कहाँ गुम है तेरे रेशमी आँचल की क़सम
आँसू अब आँख में कंकर की तरह लगता है

याद हैं तुझसे बिछड़ने की वो ठन्डी रातें
अब तो हर रूत में दिसम्बर की तरह लगता है

कभी दिल बनके जो सीने से लगा करता था
अब वही पीठ में खंजर की तरह लगता है

नेज़ा बरदार¹, ज़रा देख मेरे काँधे पर
जाने क्या है जो मुझे सर की तरह लगता है

रात की गोद में ये सहमा हुआ आधा चाँद
मेरे टूटे हुये सागर की तरह लगता है

जिसने कुछ देखा न हो गाँव के पनघट के सिवा
उसको दरिया भी समन्दर की तरह लगता है

¹. हथियारबंद



खुशी से दूर गमों से करीब लगते हैं
तुम्हारे शहर के इन्साँ अजीब लगते हैं

इक इन्क़लाब ने, सब सूरतें बदल डालीं
हमें तो अपने ही चेहरे अजीब लगते हैं

सितारे, जिन से मेरा फ़ासला है सदियों का
कभी कभी तो बहुत ही करीब लगते हैं

वो इक इशारे पे दुनिया खरीद सकते हैं
जो सूरतों से बहुत ही गरीब लगते हैं

पयम्बरों का नगर है, कि क्रातिलों का नगर
यहाँ दरख्त भी मुझको सलीब लगते हैं



समन्दर पार होती जा रही है
दुआ, पतवार होती जा रही है

दरीचे अब खुले मिलने लगे हैं
फ़ज़ा हमवार होती जा रही है

कोई गुम्बद है, दरवाज़े के पीछे
सदा बेकार होती जा रही है

मसाइल, जंग, खुशबू, रंग, मौसम
ग़ज़ल अखबार होती जा रही है

बहुत काँटों भरी दुनिया है लेकिन
गले का हार होती जा रही है

कई दिन से मेरे अन्दर की मस्जिद
ख़ुदा-बेज़ार होती जा रही है

गले कुछ दोस्त आकर मिल रहे हैं
छुरी पर धार होती जा रही है

कटी जाती हैं साँसों की पतंगें
हवा तलवार होती जा रही है



इस दुनिया ने मेरी वफ़ा का कितना ऊँचा मोल दिया
बातों के तेज़ाब में, मेरे मन का अमृत घोल दिया

जब भी कोई इनआम मिला है, मेरा नाम भी भूल गये
जब भी कोई इल्ज़ाम लगा है, मुझ पे लाकर ढोल दिया

हाथ के छाले, पाँव के काँटे, आँख में आँसू, दिल का दर्द
तूने मुझको प्यार में जो भी तोहफ़ा दिया अनमोल दिया

अब ग़म आयें, खुशियाँ आयें, मौत आये या तू आये
मैने तो बस आहट पाई और दरवाज़ा खोल दिया

जितना ख़ुशी से रिश्ता मेरा उतना ग़म से नाता है
मैने इक मीज़ान में अपना सारा दुख सुख तोल दिया



ग़म से आकर गले खुशी भी लगे
ज़िन्दगी है तो ज़िन्दगी भी लगे

तू जो आये तो खुद भी खो जाऊँ
तू न हो तो तेरी कमी भी लगे

उसकी आँखों को याद कर लेना
आपको प्यास जब कभी भी लगे

हमने सीखी नहीं है किस्मत से
ऐसी उर्दू जो फ़ारसी भी लगे

वो कभी रूह में उतर आये
और किसी रोज़ अजनबी भी लगे

अशक पलकों पे हों तो अच्छा है
शामियाने में रोशनी भी लगे



तुम्ही कहो, कि ठिकाना मेरा कहाँ है मियाँ
ज़मीं से भाग भी जाऊँ तो आसमां है मियाँ

मैं तुझसे झूठ भी बोलूँ तो छुप नहीं सकता
तमाम शहर यहाँ मेरा राज़दां है मियाँ

मुझे खबर नहीं, मन्दिर जले हैं या मस्जिद
मेरी निगाह के आगे तो सब धुआँ है मियाँ

मैं सब को राम समझ लूँ तो ये भी ठीक नहीं
यहाँ हर एक के कांधे पे इक कमाँ है मियाँ

अभी तो कोई तरक्की न कर सके हम लोग
वही किराए का टूटा हुआ मकाँ है मियाँ



तीरगी चाँद के ज़ीने से सहर तक पहुँची
ज़ुल्फ़ क़ांधे से जो उतरी तो कमर तक पहुँची

मैंने पूछा था कि ये हाथ में पत्थर क्यों है
बात जब आगे बढ़ी तो मेरे सर तक पहुँची

मैं तो सोया था मगर बारहा, तुझसे मिलने
जिस्म से आँख निकलकर तेरे घर तक पहुँची

तुम तो सूरज के पुजारी हो, तुम्हें क्या मालूम
रात किस हाल में कट कट के सहर तक पहुँची

लोग तो सिर्फ़ ख़राबी पे नज़र रखते हैं
मेरे ऐबों की सज़ा मेरे हुनर तक पहुँची



अभी तो सिर्फ़ परिन्दे शुमार करना है
ये फिर बतायेंगे किस को शिकार करना है

ये तेरी पीठ है ऐ मेरे बेखबर दुश्मन
मगर मुझे तेरे सीने पे वार करना है

हम अपने शहर में महफूज भी हैं खुश भी हैं
ये सच नहीं है, मगर एतबार करना है

हमारा शौक्र है दार-ओ-रसन¹ की पैमाईश
तुम्हारा काम कबूतर शिकार करना है

तुझे कबीले के क़ानून तोड़ने होंगे
मुझे तो सिर्फ़ तेरा इन्तिज़ार करना है

बहुत गुरुर है तुझको ऐ सर फिरे तूफ़ाँ
मुझे भी ज़िद है कि दरिया को पार करना है

¹. फांसी का फंद़ा



मेरे अपने मुझे मिट्टी में मिलाने आये
तब कहीं जाके मेरे होश ठिकाने आये

तूने बालों में सजा रक्खा था कागज़ का गुलाब
मैं ये समझा कि बहारों के ज़माने आये

चाँद ने रात की दहलीज़ को बख़्शे हैं चराग़
मेरे हिस्से में भी अशकों के ख़ज़ाने आये

दोस्त होकर भी महीनों नहीं मिलता मुझसे
उससे कहना कि कभी ज़ख़्म लगाने आये

फुरसतें चाट रही हैं मेरी हस्ती का लहू
मुंतज़िर¹ हूँ कि, मुझे कोई बुलाने आये

¹. इंतज़ार में



शहर के बिखरे हुए मंज़र उठा ले जायेंगे
फूल चुनने वाले आकर सर उठाले जायेंगे

इक नई मस्जिद बनाना चाहते हैं शहर में
तेरे कूचे का कोई पत्थर उठा ले जायेंगे

हम फ़क़ीरों के लिये तो सारी दुनिया एक है
हम जहाँ जायेंगे अपना घर उठा ले जायेंगे

मस्जिदों की सीढ़ियों पर बैठने वाले फ़क़ीर
क्या ख़बर थी एक दिन मिम्बर¹ उठा ले जायेंगे

रंग महलों के दरीचे खोलिये आलम पनाह
वर्ना शहज़ादी को जादूगर उठा ले जायेंगे

1. मंच, मस्जिदों में रखी जाने वाली 2 या 3 पायदान की सीढ़ीनुमा चीज़ जिस पर बैठकर संबोधित किया जाता है



हर एक चेहरे को ज़ख्मों का आइना न कहो
ये ज़िन्दगी तो है रहमत इसे सज़ा न कहो

न जाने कौन सी मजबूरियों का क़ैदी हो
वो साथ छोड़ गया है तो बेवफ़ा न कहो

ये और बात कि दुश्मन हुआ है आज मगर
वो मेरा दोस्त था कल तक, उसे बुरा न कहो

ये शहर वो है जहाँ राक्षस भी रहते हैं
हर इक तराशे हुए बुत को देवता न कहो

हमारे ऐब हमें उँगलियों पे गिनवाओ
हमारी पीठ के पीछे हमें बुरा न कहो



सुलगते सारे छप्पर लग रहे हैं
कवलू मक़बरोँ पर लग रहे हैं

बबूल आँगन में बोया जा रहा है
पहाड़ों पर सनोबर लग रहे हैं

ख़ुदा से काम कोई आ पड़ा है
बहुत मस्जिद के चक्कर लग रहे हैं

यहाँ दरिया पे पाबंदी नहीं है
मगर पहरे लबों पर लग रहे हैं

बहुत रंगीं तबियत हैं परिन्दे
दरख़्तों पर कैलेण्डर लग रहे हैं

वो अन्दर से बहुत प्यासे हैं साहिब
बज़ाहिर जो समन्दर लग रहे हैं



जो माल तेरा था कल तक वो अब पराय का है
यही रिवाज मेरे शहर की सराय का है

इसी लिये तो मुसलसल शिकस्त खाते हैं
हमारी फ़ौज में सेनापति किराय का है

जो दोस्तों की तरह मिलता है अन्धेरे में
वही उजाला तो दुश्मन हमारे साये का है

दिखाई देता है जो भेड़िये के होंठों पर
वो लाल दूध हमारी सफ़ेद गाय का है

शरीफ़ लोग भी राहत से मिलने जुलने लगे
वो अब शराब का आशिक़ नहीं है चाय का है



सफ़र सफ़र तेरी यादों का नूर जायेगा
हमारे साथ में सूरज ज़रूर जायेगा

बिखर चुका हूँ मैं इमली की पत्तियों की तरह
अब और लेके कहाँ तक गुरूर जायेगा

मेरी दुआओं, ज़रा साथ साथ ही रहना
वो इस सफ़र में बहुत दूर दूर जायेगा

दिलों का मैल ही सबसे बड़ी सदाक़त है
न जाने कब ये दिमागी फ़ितूर जायेगा

ये मशविरा है कि बैसाखियाँ उधार न ले
उड़नचियों से कोई कितनी दूर जायेगा



चाँद मेहमाँ मेरे मकान में था
मैं खुदा जाने किस जहान में था

इक कली मुस्करा के फूल हुई
ये क़सीदा भी तेरी शान में था

दिल्ली वालों को क्यों सुना आये
शेर तो लखनवी ज़बान में था

धूप की इक किरण भी सह न सका
वो परिन्दा जो आसमान में था

हू-ब-हू तुमसे मिलता जुलता हुआ
एक चेहरा हमारे ध्यान में था



रात की धड़कन जब तक जारी रहती है
सोते नहीं हम ज़िम्मेदारी रहती है

जब से तूने हल्की-हल्की बातें कीं
यार तबीयत भारी-भारी रहती है

पाँव कमर तक धँस जाते है धरती में
हाथ पसारे जब खुदारी रहती है

वह मंज़िल पर अक्सर देर से पहुँचे हैं
जिन लोगों के पास सवारी रहती है

छत से उसकी धूप के नेज़े आते हैं
जिस आँगन में छाँव हमारी रहती है

घर के बाहर ढूँडता रहता हूँ दुनिया
घर के अन्दर दुनियादारी रहती है



बरछी ले कर चाँद निकलने वाला है
घर चलिए अब सूरज ढलने वाला है

मंज़रनामा वही पुराना है लेकिन
नाटक का उनवान¹ बदलने वाला है

तौर तरीक़े बदले नरम उजालों ने
हर जुगनू अब आग उगलने वाला है

धूप के डर से कब तक घर में बैठोगे
सूरज तो हर रोज़ निकलने वाला है

एक पुराने खेल खिलौने जैसी है
दुनिया से अब कौन बहलने वाला है

दहशत का माहौल है सारी बस्ती में
क्या कोई अख़बार निकलने वाला है

बे सिमती का मारा मेरा नन्हापन
भीड़ के पीछे-पीछे चलने वाला है

सब को दुःख से मुक्ति मिलने वाली है
बोतल से इक देव निकलने वाला है

महँगी कालीनें लेकर क्या किजैगा
अपना घर भी एक दिन जलने वाला है

सारी सड़कें मातम करती रहती हैं
हर बच्चा रस्सी पर चलने वाला है

1. शीर्षक



सबब वह पूछ रहे हैं उदास होने का
मेरा मिज़ाज नहीं बेलिबास होने का

नया बहाना है हर पल उदास होने का
ये फ़ायदा है तेरे घर के पास होने का

महकती रात के लम्हों, नज़र रखो मुझ पर
बहाना ढूँड रहा हूँ उदास होने का

मैं तेरे पास बता किस गरज़ से आया हूँ
सुबूत दे मुझे चेहरा शनास होने का

मेरी ग़ज़ल से बना ज़ेहन में कोई तस्वीर
सबब न पूछ मेरे देवदास होने का

कहाँ हो आओ मेरी भूली बिसरी यादों आओ
ख़ुश आमदीद, है मौसम उदास होने का

कई दिनों से तबीयत मेरी उदास न थी
यही जवाज़ बहुत है उदास होने का

मैं एहमीयत भी समझता हूँ कहकहों की मगर
मज़ा कुछ अपना अलग है उदास होने का

मेरे लबों से तबस्सुम मज़ाक करने लगा
मैं लिख रहा था क़सीदा उदास होने का

पता नहीं ये परिन्दे कहाँ से आ पहुँचे
अभी ज़माना कहाँ था उदास होने का

मैं कह रहा हूँ कि ऐ दिल इधर-उधर न भटक
गुज़र न जाए ज़माना उदास होने का



दुआओं में वह तुम्हें याद करने वाला है
कोई फ़कीर की इमदाद करने वाला है

ये सोच-सोच के शर्मिन्दगी सी होती है
वह हुक्म देगा जो फ़रियाद करने वाला है

ज़मीन हम भी तेरे वारिसों में हैं के नहीं
वह इस सवाल को बुनियाद करने वाला है

यही ज़मीन मुझे गोद लेने वाली है
ये आसमां मेरी इमदाद करने वाला है

ये वक्त तू जिसे बर्बाद करता रहता है
ये वक्त ही तुझे बर्बाद करने वाला है

ख़ुदा दराज़ करे उम्र मेरे दुश्मन की
कोई तो है जो मुझे याद करने वाला है



मुर्ग माही कबाब ज़िन्दाबाद
हर सनद हर खिताब ज़िन्दाबाद

मेरी बस्ती में एक दो अन्धे
पढ़ चुके हर किताब ज़िन्दाबाद

यार अपना है क्या रहें न रहें
शहर की आब ओ ताब ज़िन्दाबाद

सीख लेते हैं गूंगे बहरे भी
नारा-ए-इन्क़लाब ज़िन्दाबाद

रुई की तितलियाँ सलामत बाश
कागज़ों के गुलाब ज़िन्दाबाद

लाख पर्दों में रहने वाले तुम
आज कल बेनक्राब ज़िन्दाबाद

फिर पुरानी लतें पुराने शौक
फिर पुरानी शराब ज़िन्दाबाद

दिन नमाज़ें, नसीहतें, फ़तवे
रात चंग ओ रूबाब ज़िन्दाबाद

रोज़ दो चार छै गुनाह करो
रोज़ कारे-सवाब ज़िन्दाबाद

तूने दुनिया जवान रखी है
ऐ बुज़ुर्ग आफ़ताब ज़िन्दाबाद



उसे अब के वफ़ाओं से गुज़र जाने की जल्दी थी
मगर इस बार मुझको अपने घर जाने की जल्दी थी

इरादा था कि मैं कुछ देर तूफ़ाँ का मज़ा लेता
मगर बेचारे दरिया को उतर जाने की जल्दी थी

मैं अपनी मुट्ठियों में क़ैद कर लेता ज़मीनों को
मगर मेरे कबीले को बिखर जाने की जल्दी थी

मैं आखिर कौन सा मौसम तुम्हारे नाम कर देता
यहाँ हर एक मौसम को गुज़र जाने की जल्दी थी

वह शाखों से जुदा होते हुए पत्तों पे हँसते थे
बड़े ज़िन्दा नज़र थे जिनको मर जाने की जल्दी थी

मैं साबित किस तरह करता के हर आईना झूठा है
कई कमज़र्फ़ चेहरों को उतर जाने की जल्दी थी



चरागों का घराना चल रहा है
हवा से दोस्ताना चल रहा है

जवानी की हवाएँ चल रही है
बुजुर्गों का खज़ाना चल रहा है

मेरी गुमगुश्तगी पर हंसने वालों
मेरे पीछे ज़माना चल रहा है

अभी हम ज़िन्दगी से मिल न पाये
तआरुफ़ ग़ायबाना चल रहा है

नये किरदार आते जा रहे हैं
मगर नाटक पुराना चल रहा है

वही दुनिया वही साँसें वही हम
वही सब कुछ पुराना चल रहा है

ज़्यादा क्या तवक्को हो ग़ज़ल से
मियाँ, बस आबओदाना चल रहा है

समन्दर से किसी दिन फिर मिलेंगे
अभी पीना पिलाना चल रहा है

वही महशर वही मिलने का वादा
वही बूढ़ा बहाना चल रहा है

यहाँ एक मदरसा होता था पहले
मगर अब कारख़ाना चल रहा है



रात बहुत तारीक नहीं है
लेकिन घर नज़दीक नहीं है

फूलों को समझा दे कोई
हँसते रहना ठीक नहीं है

तनकीदें¹ बारीक हैं जितनी
फ़न इतना बारीक नहीं है

कोई ताज़ा शेर हो नाज़िल
हक माँगा है भीख नहीं है

दिन हैं जितने काले-काले
रात इतनी तारीक नहीं है

आज तुम्हारी याद न आई
आज तबीयत ठीक नहीं है



इधर की शय उधर कर दी गई है
ज़मीं ज़ेरो ज़बर कर दी गई है

ये काली रात है दो चार पल की
ये कहने में सहर कर दी गई है

तआरुफ़ को ज़रा फैला दिया है
कहानी मुख़्तसर कर दी गई है

इबादत में बसर करनी थी लेकिन
खराबों में बसर कर दी गई है

कई ज़र्ज़त बागी हो चुके हैं
सितारों को ख़बर कर दी गई है

वह मेरी हमक्रदम होने न पाई
जो मेरी हम सफ़र कर दी गई है



ऊँचे-ऊँचे दरबारों से क्या लेना
बेचारे हैं बेचारों से क्या लेना

जो मांगेंगे तूफ़ानों से मांगेंगे
काग़ज़ की इन पतवारों से क्या लेना

हम ठहरे बंजारे हम बंजारों को
दरवाज़ों और दीवारों से क्या लेना

ख़्वाबों वाली कोई चीज़ नहीं मिलती
सोच रहा हूँ बाज़ारों से क्या लेना

ख़ाली हाथों जीतना है ये जंग हमें
लकड़ी की इन तलवारों से क्या लेना

आग में हम तो बाग़ लगाते हैं हमको
दोज़ख़ तेरे अंगारों से क्या लेना

चारागरी का दावा करते फिरते हैं
बस्ती के इन बीमारों से क्या लेना

साथ हमारे कई सुनहरी सदियाँ हैं
हमें सनीचर इतवारों से क्या लेना

अपना मालिक अपना ख़ालिक अफ़ज़ल है
आती जाती सरकारों से क्या लेना

पाँव पसारो सारी धरती अपनी है
यार इजाज़त मक्कारों से क्या लेना



काम सब गैर ज़रूरी है जो सब करते हैं
और हम कुछ नहीं करते हैं ग़ज़ब करते हैं

आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत
हम चिरागों का भी उतना ही अदब करते हैं

हम पे हाकिम का कोई हुक्म नहीं चलता है
हम क़लन्दर हैं शहँशाह लक़ब करते हैं

देखिये जिसको उसे धुन है मसीहाई की
आज कल शहर के बीमार मतब करते हैं

ख़ुद को पत्थर सा बना रखा है कुछ लोगों ने
बोल सकते हैं मगर बात ही कब करते हैं

एक एक पल को किताबों की तरह पढ़ने लगे
उम्र भर जो न किया हमने वो अब करते हैं



यह आईना फ़साना हो चुका है
तुझे देखे ज़माना हो चुका है

वतन के मौसमों अब लौट आओ
तुम्हें देखे ज़माना हो चुका है

दवाएँ क्या, दुआ क्या, बददुआ क्या
सभी कुछ ताजिराना हो चुका है

अब आँसू भी पुराने हो चुके हैं
समन्दर भी पुराना हो चुका है

चलो दीवाने-खास अब काम आया
परिन्दों का ठिकाना हो चुका है

वही वीरानियाँ हैं शहरे दिल में
यहाँ पहले भी आना हो चुका है

तेरी मसरूफ़ियत हम जानते हैं
मगर मौसम सुहाना हो चुका है

मोहब्बत में ज़रूरी हैं वफ़ाएँ
यह नुस्खा अब पुराना हो चुका है

चलो अब हिज़्र का भी हम मज़ा लें
बहुत मिलना मिलाना हो चुका है

हज़ारों सूरतें रौशन हैं दिल में
यह दिल आईना खाना हो चुका है



अपने दीवार ओ दर से पूछते हैं
घर के हालात घर से पूछते हैं

क्यों अकेले हैं काफ़िले वाले
एक इक हमसफ़र से पूछते हैं

कितने जंगल हैं इन मकानों में
बस यही शहर भर से पूछते हैं

यह जो दीवार है, यह किसकी है
हम इधर वह उधर से पूछते हैं

हैं कनीज़ें भी इस महल में क्या
शाहज़ादों के डर से पूछते हैं

क्या कहीं क़त्ल हो गया सूरज
रात से रात भर से पूछते हैं

जुर्म है ख़्वाब देखना भी क्या
बस यही चश्मे तर से पूछते हैं

ये मुलाक़ात आखिरी तो नहीं
हम जुदाई के डर से पूछते हैं

कौन वारिस है छाँव का आखिर
धूप में हम सफ़र से पूछते हैं

ये किनारे भी कितने सादा हैं
कश्तियों को भँवर से पूछते हैं

वह गुज़रता तो होगा अब तन्हा
एक इक रहगुज़र से पूछते हैं



मेरे मरने की ख़बर है उसको
अपनी रुसवाई का डर है उसको

अब वह पहला सा नज़र आता नहीं
ऐसा लगता है नज़र है उसको

मैं किसी से भी मिलूँ कुछ भी करूँ
मेरी नीयत की ख़बर है उसको

भूल जाना उसे आसान नहीं
याद रखना भी हुनर है उसको

रोज़ मरने की दुआ माँगता है
जाने किस बात का डर है उसको

मंज़िलें साथ लिये फिरता है
कितना दुशवार सफ़र है उसको



सर पर सात आकाश, ज़मीं पर सात समन्दर बिखरे हैं
आँखे छोटी पड़ जाती हैं इतने मन्ज़र बिखरे हैं

ज़िन्दा रहना खेल नहीं है इस आबाद ख़राबे में
वह भी अक्सर टूट गया है हम भी अक्सर बिखरे हैं

इस बस्ती के लोगों से जब बातें की तो यह जाना
दुनिया भर को जोड़ने वाले अन्दर अन्दर बिखरे हैं

इन रातों से अपना रिश्ता जाने कैसा रिश्ता है
नींदें कमरों में जागीं हैं ख़्वाब छतों पर बिखरे हैं

आँगन के मासूम शजर ने एक कहानी लिखी है
इतने फल शाख़ों पे नहीं थे जितने पत्थर बिखरे हैं

सारी धरती, सारे मौसम, एक ही जैसे लगते हैं
आँखों आँखों कैद हुए थे मन्ज़र मन्ज़र बिखरे हैं



ये हर सू जो फ़लक-मंज़र खड़े हैं
न जाने किसके पैरों पर खड़े हैं

तुला है धूप बरसाने पे सूरज
शजर भी छतरियाँ लेकर खड़े हैं

इन्हें नामों से मैं पहचानता हूँ
मेरे दुश्मन मेरे अन्दर खड़े हैं

किसी दिन चाँद निकला था यहाँ से
उजाले आज भी छत पर खड़े हैं

जुलूस आने को है दीदावरों का
नज़रें नीची किए मंज़र खड़े हैं

उजाला सा है कुछ कमरे के अन्दर
ज़मीनो-आसमां बाहर खड़े हैं



शाम से पहले शाम कर दी है
क्या कहानी तमाम कर दी है

आज सूरज ने मेरे आँगन में
हर किरन बेनियाम¹ कर दी है

जिससे रहता है आसमां नाराज़
वो ज़मीं मेरे नाम कर दी है

दोपहर तक तो साथ चल सूरज
तूने रस्ते में शाम कर दी है

चेहरा-चेहरा हयात लोगों ने
आइनों की गुलाम कर दी है

क्या पढ़ें हम कि कुछ किताबों ने
रौशनी तक हराम कर दी है

¹. नग्न



हवा खुद अबके हवा के खिलाफ़ है जानी
दिये जलाओ कि मैदान साफ़ है जानी

हमें चमकती हुई सर्दियों का खौफ़ नहीं
हमारे पास पुराना लिहाफ़ है जानी

वफ़ा का नाम यहाँ हो चुका बहुत बदनाम
मैं बेवफ़ा हूँ मुझे एतराफ़¹ है जानी

है अपने रिश्तों की बुनियाद जिन शरायत पर
वहीं से तेरा मेरा इख़्तिलाफ़ है जानी

वो मेरी पीठ में खंजर उतार सकता है
कि जंग में तो सभी कुछ मुआफ़ है जानी

मैं जाहिलों में भी लहजा बदल नहीं सकता
मेरी असास² यही शीन-क्राफ़ है जानी

1. स्वीकार

2. बुनियाद



ऊँघती रहगुज़र के बारे में
लोग पूछेंगे घर के बारे में

मील के पत्थरों से पूछता हूँ
अपने एक हमसफ़र के बारे में

मशविरा कर रहे हैं आपस में
चन्द जुगनू सहर के बारे में

एक सच्ची खबर सुनाता हूँ
एक झूठी खबर के बारे में

ऊँगलियों से लहू टपकता है
क्या लिखें चारागर के बारे में

लाख मैं गुमशुदा सही लेकिन
जानता हूँ खिज़र¹ के बारे में

¹. रास्ता दिखाने वाले पैग़म्बर



धर्म बूढ़े हो गए मज़हब पुराने हो गए
ऐ तमाशागर तेरे करतब पुराने हो गए

आज-कल छुट्टी के दिन भी घर पड़े रहते हैं हम
शाम, साहिल, तुम, समन्दर सब पुराने हो गए

कैसी चाहत, क्या मुरव्वत क्या मुहब्बत क्या खुलूस
इन सभी अल्फ़ाज के मतलब पुराने हो गए

रेंगते रहते हैं हम सदियों से सदियाँ ओढ़कर
हम नए थे ही कहाँ जो अब पुराने हो गए

आस्तीनों में वही खंजर वही हमदर्दियाँ
हैं नए अहबाब लेकिन ढब पुराने हो गए

एक ही मरकज़ पे आँखें ज़ंग-आलूदा हुयीं
चाक पर फिर-फिर के रोज़ो-शब पुराने हो गए



खड़े हैं मुझको खरीदार देखने के लिए
मैं घर से निकला था बाज़ार देखने के लिए

हज़ारों बार हज़ारों की सिम्त देखते हैं
तरस गए तुझे इक बार देखने के लिए

क्रतार में कई नाबीना लोग शामिल हैं
अमीरे-शहर का दरबार देखने के लिए

जगाए रखता हूँ सूरज को अपनी पलकों पर
ज़मीं को ख़्वाब से बे-दार¹ देखने के लिए

अजीब शख्स है लेता है जुगनुओं से खिराज²
शबों को अपनी चमकदार देखने के लिए

हर-एक हर्फ़ से चिंगारियाँ निकलती हैं
कलेजा चाहिए अखबार देखने के लिए

1. जाग्रत

2. किराया, महसूल, माल गुज़ारी



रास्ता भूल गया क्या इधर आने वाला
अब तो ये सुबह का तारा भी है जाने वाला

याद के फूल को पलकों पे सजा कर रखना
ये मुसाफिर है बहुत दूर से आने वाला

आप उस शख्स से वाकिफ तो हैं कम वाकिफ हैं
वो मसीहा है मगर ज़ख्म लगाने वाला

अजनबी शहर से मायूस ना हो चल तो सही
मिल ही जाएगा कोई ज़ख्म लगाने वाला

जिस्म में सांस थी जब तक वो मुखालिफ ही रहा
मेरा दुश्मन था मगर साथ निभाने वाला



तो क्या बारिश भी ज़हरीली हुई है
हमारी फ़स्ल क्यों नीली हुई है

ये किसने बाल खोले मौसमों के
ये रंगत किस लिए पीली हुई है

सफ़र का लुत्फ़ बढ़ता जा रहा है
ज़मीं कुछ और पथरीली हुई है

सुनहरी लग रहा है एक-एक पल
कई बरसों में तब्दीली हुई है

दिखाया है अगर सूरज ने गुस्सा
तो बालू और चमकीली हुई है



नफ़रत का बाज़ार न बन
फूल खिला तलवार न बन

रिश्ता-रिश्ता लिख मंज़िल
रस्ता बन दीवार न बन

कुछ लोगों से बैर भी ले
दुनिया भर का यार न बन

अपना दर ही दार लगे
इतना दुनियादार न बन

सब की अपनी साँसें हैं
सबका दावेदार न बन

कौन खरीदेगा तुझको
उर्दू का अखबार न बन



खाक होना तय हुआ अब खाकसारी के लिए
ये दुकाँ हमने लगायी थी उधारी के लिए

कुछ पलों की तितलियों के रंग मेरे संग हैं
चंद खुशियाँ हैं ग़मों की पासदारी¹ के लिए

दाँव पर लगने लगीं फिर इज़्ज़तें सादात² की
इश्क की राहें बहुत आसों है ख़वारी³ के लिए

इक समन्दर अपने ही अन्दर डुबोना है मुझे
एक कश्ती चाहिए मुझको सवारी के लिए

धड़कनें पलभर भी दिल से दूर रह सकती नहीं
देवियाँ पागल हुई हैं इक पुजारी के लिए

तजुर्बा अपना 'असद' से कुछ अलग है दोस्तों
मय ज़रूरी शय है यक गूना-खुमारी⁴ के लिए

¹. आदर करना

². अच्छा भाग्य

³. शर्म की बात

⁴. मस्ती



दिलों में आग लबों पर गुलाब रखते है
सब अपने चेहरों पे दुहरी नक्राब रखते हैं

बहुत से लोग कि जो हर्फ़-आशना¹ भी नहीं
इसी में खुश हैं कि तेरी किताब रखते हैं

ये मयक्रदा है, वो मस्जिद है, वो है बुतखाना
कहीं भी जाओ फ़रिश्ते हिसाब रखते हैं

हमारे शहर के मंज़र न देख पाएँगे
यहाँ के लोग तो आँखों में ख़्वाब रखते हैं

हमें चिराग़ समझकर बुझा ना पाओगे
हम अपने घर में कई आफ़ताब रखते हैं...

¹. शब्द से परिचित



चेहरे से धूप आँख से गहराई ले गया
आईना सारे शहर की बीनाई ले गया

डूबे हुए जहाज़ पर क्या तब्सरा¹ करें
ये हादसा तो सोचा कि गहराई ले गया

हालाँकि बेज़बान था लेकिन अजीब था
जो शख्स मुझसे छीन के गोयाई² ले गया

‘गालिब’ तुम्हारे वास्ते अब कुछ नहीं रहा
गलियों के सारे संग तो सौदाई ले गया

मैं आज अपने घर से निकलने ना पाऊँगा
बस एक कमीज़ थी जो मेरा भाई ले गया

1. चर्चा करना

2. बोलने की शक्ति



आँख प्यासी है कोई मंज़र दे
इस जज़ीरे को भी समन्दर दे

अपना चेहरा तलाश करना है
गर नहीं आईना तो पत्थर दे

बन्द कलियों को चाहिए शबनम
इन चरागों में रौशनी भर दे

पत्थरों के सरो से क़र्ज़ उतार
इस सदी को कोई पयम्बर¹ दे

क्रहक्रहों में गुज़र रही है हयात
अब किसी दिन उदास भी कर दे

फिर न कहना कि ख़ुदकुशी है गुनाह
आज फ़ुर्सत है फ़ैसला कर दे

¹. देवदूत



काली रातों को भी रंगीन कहा है मैंने
तेरी हर बात पर आमीन कहा है मैंने

तेरी दस्तार पर तन्कीद की हिम्मत तो नहीं
अपनी पापोश¹ को कालीन कहा है मैंने

ज़ायक़े बारहा आँखों में मज़ा देते हैं
बाज़ चेहरों को भी नमकीन कहा है मैंने

तूने फ़न की नहीं शिजरे की हिमायत की है
तेरे एजाज़² को तौहीन³ कहा है मैंने

मसलेहत कहिये इसे या के सियासत कहिये
चील कव्वों को भी शाहीन कहा है मैंने

¹. पायदान

². सम्मान

³. अपमान



साथ मंज़िल थी मगर खौफ़ो- खतर ऐसा था
उम्र-भर चलते रहे लोग सफ़र ऐसा था

हिफ़ज थीं मुझको भी चेहरों की किताबें क्या-क्या
दिल शिकस्ता था मगर तेज़ नज़र ऐसा था

आग ओढ़े था मगर बाँट रहा था साया
धूप के शहर में इक तन्हा शजर ऐसा था

लोग खुद अपने चरागों को बुझा कर सोए
शहर में तेज़ हवाओं का असर ऐसा था

जब वो आए तो मैं खुश भी हुआ शर्मिदा भी
मेरी तक़दीर थी ऐसी मेरा घर ऐसा था



अजनबी ख्वाहिशें सीने में दबा भी न सकूँ
ऐसे ज़िद्दी हैं परिन्दे कि उड़ा भी न सकूँ

फूँक डालूँगा किसी रोज़ मैं दिल की दुनिया
ये तिरा खत तो नहीं है कि जला भी न सकूँ

मेरी ग़ैरत भी कोई शय है कि महफ़िल में मुझे
उसने इस तरह बुलाया कि मैं जा भी न सकूँ

इक न इक रोज़ कहीं ढूँढ़ ही लूँगा तुझको
ठोकरें ज़हर नहीं हैं कि मैं खा भी न सकूँ

फल तो सब मेरे दरख्तों के पके हैं लेकिन
इतनी कमजोर हैं शाखें के हिला भी ना सकूँ



शह का नौकर न कहे शह का मुसाहिब समझे
उसकी ख्वाहिश है कि दुनिया उसे गालिब समझे

मेरा क्या मोल है, ये फैसला तुझ पर छोड़ा
मुझको मंजूर है तू जो भी मुनासिब समझे

बादशाहों के कसीदों से किताबें भर दीं
कम नज़र लोग थे ज़रों को कवाकुब समझे

मैंने जो कुछ भी लिखा, अपने लिए लिखा था
ये अलग बात कि वो खुद को मुखातिब समझे

हमको दरबार में आने की इजाज़त ही नहीं
हम ना एजाज़ ना ओहदा, ना मरातिब समझे



ग़ज़ल फेरी लगाकर बेचता हूँ
मैं सर्राफ़े में पत्थर बेचता हूँ

सियाह मिट्टी की चिड़ियों के बदन पर
गुलाबी पर लगाकर बेचता हूँ

मुझे परवा नहीं सूदो-ज़ियाँ¹ की
मैं क़तरों में समन्दर बेचता हूँ

वो काग़ज़ की मुँडेरें बाँधता है
मैं मिट्टी के कबूतर बेचता हूँ

खरीदे हैं मेरे बच्चों ने फ़ाक़े
मैं सड़कों पर मुक़द्दर बेचता हूँ

खमोशी है मेरे लफ़्ज़ों की गाहक
बड़े नायाब गौहर बेचता हूँ

¹. हानि-लाभ

123



हर नयी शय को पुरानी कर दूँ
आग मिल जाए तो पानी कर दूँ

क़ैद आँखों में हैं आँसू वर्ना
हर तरफ़ पानी ही पानी कर दूँ

वज़्अदारी है लहू में वर्ना
मैं अभी ख़त्म कहानी कर दूँ

मैं सुबुक लफ़्ज़ो-मआनी का अमीं
संग भी आए तो पानी कर दूँ

आ, क़सीदा कोई लिखूँ तेरा
ला, तुझे यूसुफ़े-सानी कर दूँ



सुलगती प्यास का कुछ हल ज़रूर निकलेगा
हमारे नाम का बादल ज़रूर निकलेगा

अदालतें न सही, जंग की ज़मीं पर सही
मैं मसअला हूँ मेरा हल ज़रूर निकलेगा

हैं मुर्दाखोर परिन्दे छतों पर बैठे हुए
यहीं कहीं कोई मक्कतल ज़रूर निकलेगा

हरे-भरे कई शहरों का तजुर्बा है मुझे
कहीं भी जाइए जंगल ज़रूर निकलेगा

कोई भी दौर हो लेकर जिहाद की मशअल
मेरी तरह कोई पागल ज़रूर निकलेगा...



मैं जब चलूँ तो ये दौलत भी साथ रख देना
मेरे बुजुर्ग मेरे सर पर हाथ रख देना

ढलेगा दिन तो सुलगने लगेगा दिल मेरा
मुझे भी घर के चरागों के साथ रख देना

ये आने वाले ज़मानों के काम आएँगे
कहीं छिपा के मेरे तजुर्बात रख देना

अँधेरी रात के गुमराह जुगनुओं के लिए
उदास धूप की टहनी पर रात रख देना

मैं एक सच हूँ अगर सुन सको तो सुनते रहो
ग़लत कहूँ तो मेरे मुँह पर हाथ रख देना



राह में खतरे भी हैं लेकिन ठहरता कौन है
मौत कल आती है आज आ जाए डरता कौन है

सब ही अपनी तेज़गामी¹ के नशे में चूर हैं
लाख आवाज़ें लगा लीजै ठहरता कौन है

हैं परिन्दों के लिए शादाब पेड़ों के हुजूम
अब मेरी टूटी हुई छत पर उतरता कौन है

तेरे लश्कर के मुकाबिल मैं अकेला हूँ मगर
फ़ैसला मैदान में होगा कि मरता कौन है

सबने मल रक्खा है चेहरे पर तआस्सुब का गुबार
आईना हम बन भी जाएँ तो सँवरता कौन है

¹. तीव्रगति से चलना



होंठों पर अपने प्यास का दोज़ख¹ खंगाल ले
या एड़ियाँ रगड़ कोई चश्मा निकाल ले

भाई समझ रहा है तो आ जा गले लगें
दुश्मन समझ रहा है तो हसरत निकाल ले

ऐसे तो ख़त्म हो न सकेगा मुक़ाबला
अब मशविरा यही है कि सिक्का उछाल ले

ये लग्ज़िशें तो मैंने विरासत में पाई हैं
अब तेरा काम है कि गिरूँ तो सँभाल ले

यारो! मुआफ़ 'मीर' का मैं मोतक्रिद नहीं
ऐसी भी क्या ग़ज़ल कि कलेजा निकाल ले

¹. नर्क



मेरे अहबाब को जिस वक़्त भी फ़ुर्सत होगी
और तो कुछ नहीं होगा, मेरी ग़ीबत होगी

अभी रंगों की जुबाँ गुंग पड़ी है लेकिन
जब ये तस्वीर बनेगी तो क़यामत होगी

अब के बारिश में नहाने का मज़ा आएगा
बेलिबासी की तरह घर की खुली छत होगी

माँ के क़दमों के निशां हैं कि दिए रौशन हैं
ग़ौर से देख यहीं पर कहीं जन्नत होगी

है तेरे नाम से इस शाम का ये पहला ज़ाम
इंशाअल्लाह इसी ज़ाम में बरकत होगी

उससे मिलना है तो वो शाम ढले मिलता है
धूप में घर से निकलना तो हिमाकत होगी

ये चराग़ अपने ही ताकों पे सजा ले ए दोस्त
रोशनी की तेरे घर में भी ज़रूरत होगी



शाम ने जब पलकों पर आतिश-दान लिया
कुछ यादों ने चुटकी में लोबान लिया

दरवाज़ों ने अपनी आँखें नम कर लीं
दीवारों ने अपना सीना तान लिया

प्यास तो अपनी सात समन्दर जैसी थी
नाहक हमने बारिश का एहसान लिया

मैंने तलवों से बाँधी थी छाँव मगर
शायद मुझको सूरज ने पहचान लिया

कितने सुख से धरती ओढ़ के सोए हैं
हमने अपनी माँ का कहना मान लिया



जो शाखों पर उदासी के बरहना¹ खत बनाते हैं
हम उन सूखे हुए पत्तों से घर की छत बनाते हैं

फ़रिश्ते रंग बरसाते हैं, मौसम रक्त्स² करता है
जब उड़ते बादलों में हम तेरी सूरत बनाते हैं

सुलगती रेत पर दरिया ने जिनका नाम लिक्खा था
हम उन तश्चा-लबों³ की याद में शरबत बनाते हैं

मैं जिनके बोलते अल्फ़ाज़ को गूँगा समझता हूँ
वो बूढ़े होंठ मेरे वास्ते जन्नत बनाते हैं

न जाने कौन सी तखलीक़ की मेराज⁴ हो जाए
हम अपने घर में अक्सर रुई के परबत बनाते हैं

1. नग्न

2. नृत्य

3. प्यासे होठों

4. पराकाष्ठा



सिर्फ सच और झूठ की मीज़ान में रक्खे रहे
हम बहादुर थे मगर मैदान में रक्खे रहे

जुगनुओं ने फिर अँधेरो से लड़ाई जीत ली
चाँद सूरज घर के रोशनदान में रक्खे रहे

धीरे-धीरे सारी किरनें खुदकुशी करने लगीं
हम सहीफ़ा थे मगर जुज़दान में रक्खे रहे

बन्द कमरे खोल कर सच्चाइयाँ रहने लगीं
ख़्वाब कच्ची धूप थे दालान में रक्खे रहे

सिर्फ़ इतना फ़ासला है ज़िन्दगी से मौत का
शाख़ से तोड़े गए गुलदान में रक्खे रहे

ज़िन्दगी भर अपनी गूंगी धड़कनों के साथ साथ
हम भी घर के क़ीमती सामान में रक्खे रहे



मुझे डुबो के बहुत शर्मसार रहती है
वह एक मौज जो दरिया के पार रहती है

हमारे ताक़ भी बेज़ार हैं उजालों से
दिए की लौ भी हवा पर सवार रहती है

फिर उसके बाद वही बासी मन्ज़रों के जुलूस
बहार चन्द ही लम्हे बहार रहती है

इसी से क़र्ज़ चुकाए हैं मैंने सदियों के
यह ज़िन्दगी जो हमेशा उधार रहती है

हमारी, शहर के दानिश्वरों से यारी है
इसीलिए तो क़बा तार तार रहती है

मुझे खरीदने वालों! क़तार में आओ
वह चीज़ हूँ जो पसे इश्तेहार रहती है



दांव पर मैं भी दांव पर तू भी
बेखबर मैं भी बेखबर तू भी

आसमां मुझ से दोस्ती कर ले
दरबदर मैं भी दरबदर तू भी

कुछ दिनों शहर की हवा खा ले
सीख जायेगा सब हुनर तू भी

मैं तेरे साथ तू किसी के साथ
हमसफ़र मैं भी हमसफ़र तू भी

हैं वफाओं के दोनों दावेदार
मैं भी इस पुलसिरात पर, तू भी

ऐ मेरे दोस्त तेरे बारे में
कुछ अलग राय थी मगर, तू भी



ज़िन्दगी की हर कहानी बे असर हो जाएगी
हम न होंगे तो यह दुनिया दर ब दर हो जाएगी

पाँव पत्थर करके छोड़ेगी अगर रुक जाइये
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

जुगनुओं को साथ लेकर रात रोशन कीजिए
रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

ज़िन्दगी भी काश मेरे साथ रहती उम्र भर
ख़ैर अब जैसे भी होनी है बसर हो जाएगी

तुम ने खुद ही सर चढ़ाई थी सो अब चक्खो मज़ा
मैं न कहता था, कि दुनिया दर्द-ए-सर हो जाएगी

तलखियाँ भी लाज़मी हैं ज़िन्दगी के वास्ते
इतना मीठा बन के मत रहिए शकर हो जाएगी



चेहरों के लिए आईने कुर्बान किए हैं
इस शौक्र में अपने बड़े नुकसान किए हैं

महफ़िल में मुझे गालियाँ देकर है बहुत खुश
जिस शख्स पर मैंने कई एहसान किए हैं

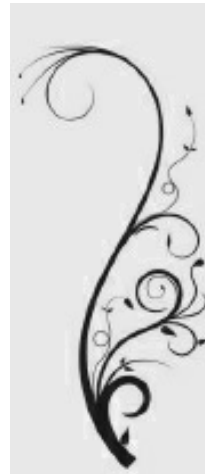
ख्वाबों से निपटना है मुझे रतजगे करके
कमबख्त कई दिन से परेशान किए हैं

रिश्तों के, मरासिम के, मुहब्बत के, वफ़ा के
कुछ शहर तो खुद हमने ही वीरान किए हैं

तू खुद भी अगर आए तो खुशबू में नहा जाए
हम घर को तेरे ज़िक्र से लोबान किए हैं

ऐ धड़कनों अब और ठिकाना कोई ढूँढ़ो
हम दिल में तो उस शख्स को मेहमान किए हैं

चुनिंदा अशआर



~1~

आसमां ओढ़ के सोए हैं खुले मैदां में
अपनी ये छत किसी दीवार की मोहताज नहीं

~2~

ये जाके मील के पत्थर पर कोई लिख आये
वो हम नहीं हैं जिन्हें रास्ता चलाता है

~3~

कभी दिमाग़, कभी दिल, कभी नज़र में रहो
ये सब तुम्हारे ही घर हैं, किसी भी घर में रहो

~4~

लोग हर मोड़ पर रुक रुक के सँभलते क्यों हैं
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यों हैं

~5~

उसकी याद आई है, साँसों ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता है

~6~

उँगलिया यूँ न सब पर उठाया करो
खर्च करने से पहले कमाया करो

~7~

चाँद सूरज कहाँ, अपनी मन्ज़िल कहाँ
ऐसे वैसों को मुँह मत लगाया करो

~8~

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते

~9~

मुहब्बतों का सबक़ दे रहे हैं दुनिया को
जो ईद अपने सगे भाई से नहीं मिलते

~10~

हमसे पूछो कि ग़ज़ल माँगती है कितना लहू
सब समझते हैं ये धन्धा बड़े आराम का है

~11~

मेरी ख़्वाहिश है कि, आँगन में न दीवार उठे
मेरे भाई मेरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले

~12~

मेरी गरदन पर थी तलवार मेरे दुश्मन की
मेरे बाजू पर मेरी माँ की दुआ रक्खी थी

~13~

बहुत गुरुर है तुझको ए सरफ़िरे तूफ़ाँ
मुझे भी ज़िद है कि दरिया को पार करना है

~14~

हम फ़क़ीरों के लिये तो सारी दुनिया एक है
हम जहाँ जायेंगे अपना घर उठा ले जायेंगे

~15~

ये वक्रत तू जिसे बर्बाद करता रहता है
ये वक्रत ही तुझे बर्बाद करने वाला है

~16~

ख़्वाबों वाली कोई चीज़ नहीं मिलती
सोच रहा हूँ बाज़ारों से क्या लेना

~17~

पाँव पसारो सारी धरती अपनी है
यार इजाज़त मक्कारों से क्या लेना

~18~

माँ के क़दमों के निशां हैं कि दिए रौशन हैं
ग़ौर से देख यहीं पर कहीं जन्नत होगी

~19~

राह में ख़तरे भी हैं लेकिन ठहरता कौन है
मौत कल आती है आज आ जाए डरता कौन है

~20~

है ग़लत उस को बेवफ़ा कहना
हम कहाँ के धुले धुलाए थे

~21~

जुगनुओं ने फिर अँधेरो से लड़ाई जीत ली
चाँद सूरज घर के रोशनदान में रक्खे रहे

~22~

धूप बहुत है मौसम जल थल भेजो ना
बाबा मेरे नाम का बादल भेजो ना

~23~

मैं बस्ती में आखिर किस से बात करूँ
मेरे जैसा कोई पागल भेजो ना

~24~

सवाल घर नहीं बुनियाद पर उठाया है
हमारे पाँव की मिट्टी ने सर उठाया है

~25~

जैसे दरिया किसी दरिया से मिले
आओ! हो जाएँ मुकम्मल हम तुम

~26~

जुगनुओं को साथ लेकर रात रौशन कीजिए

रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

~27~

सूरज से जंग जीतने निकले थे बेवकूफ़
सारे सिपाही मोम के थे घुल के आ गये

~28~

क्रतरा क्रतरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो

~29~

समन्दरों में मुआफ़िक़ हवा चलाता है
जहाज़ खुद नहीं चलते, खुदा चलाता है

~30~

मुझ पर नहीं उठे थे तो उठकर कहाँ गये
मैं शहर में नहीं था, तो पत्थर कहाँ गये

~31~

ये हादसा तो किसी दिन गुज़रने वाला था
मैं बच भी जाता, तो इक रोज़ मरने वाला था

~32~

मेरा नसीब, मेरे हाथ कट गये वर्ना
मैं तेरी माँग में सिन्दूर भरने वाला था

~33~

ये ज़िन्दगी जो मुझे क़र्जदार करती है
कहीं अकेले में मिल जाए तो हिसाब करूँ

~34~

दिया न छीन मेरे हाथ से कि दिल मेरा
मचल गया तो अभी आफ़ताब माँगेगा

~35~

ये क्या कि, आगे बढ़े और आ गई मंज़िल
मज़ा तो जब है के पैरों में कुछ थकान रहे

~36~

जो मांगेंगे तूफ़ानों से मांगेंगे
कागज़ की इन पतवारों से क्या लेना

~37~

यह जो दीवार है, यह किस की है
हम इधर वह उधर से पूछते हैं

~38~

अजीब शख्स है लेता है जुगनुओं से खिराज
शर्बों को अपनी चमकदार देखने के लिए

~39~

सुलगती प्यास का कुछ हल ज़रूर निकलेगा
हमारे नाम का बादल ज़रूर निकलेगा

~40~

कितने सुख से धरती ओढ़ के सोए हैं
हमने अपनी माँ का कहना मान लिया

~41~

अगर ख्याल भी आए कि तुझ को खत लिखूँ
तो घोंसलों से कबूतर निकलने लगते हैं

~42~

न जाने कौन सी मजबूरियों का कैदी हो
वो साथ छोड़ गया है तो बेवफ़ा न कहो

~43~

बहुत गुरूर है दरिया को अपने होने पर
जो मेरी प्यास से उलझे तो धज्जियाँ उड़ जाएँ

~44~

धूप के डर से कब तक घर में बैठोगे
सूरज तो हर रोज़ निकलने वाला है

~45~

ख़बर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पर ठोकर लगा के लौट आया

~46~

गिरजा में इक मोम की मरियम रक्खी थी
माँ की गोद में गुज़रा बचपन याद आया

~47~

मैं अँधेरो से बचा लाया था अपने आपको
मेरा दुःख ये है मेरे पीछे उजाले पड़ गये

~48~

ये मुझ तक आते आते हादसे क्यों लौट जाते हैं
मेरे बारे में ये, सोचा विचारा कौन करता है

~49~

बुतों से मुझको इजाज़त अगर कभी मिल जाए
तो शहर भर के ख़ुदाओं को बेनक्राब करूँ

~50~

वक़्त किस तरह गुज़रता है अंदाज़ा लगा
अपनी मुठ्ठी में ज़रा देर को बालू रख ले

~51~

किसने दस्तक दी ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है

~52~

कैसे साथी कैसे यार सब मक्कार

सबकी नीयत डावाँ डोल अल्लाह बोल

~53~

रोज़ वही एक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तय्यारी किया करो

~54~

पहले दीप जलें तो चर्चे होते थे
और अब शहर जलें तो हैरत नई होती

~55~

पुराने दाँव पर हर दिन नये आँसू लगाता है
वह अब भी एक फटे रूमाल पर खुशबू लगाता है

~56~

खाली कशकौल पर इतराई हुई फिरती है
ये फक्कीरी किसी दस्तार की मोहताज नहीं

~57~

लाख सूरज से दोस्ताना हो
चन्द जुगनू भी पाल रक्खा करो

~58~

एक पत्थर है वह मेरी राह का
गर न ठुकराऊँ तो ठोकर खाऊँ क्या?

~59~

सर बक़्र थे तो सरोँ से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वह दस्तारों के मालिक हो गये

~60~

तरक्की कर गये बीमारियों के सौदागर
ये सब मरीज़ हैं जो अब दवाएँ करने लगे

~61~

लगेगी आग तो आएँगे घर कई ज़द में
यहाँ पर सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है

~62~

सभी का खून है शामिल यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दुस्तान थोड़ी है

~63~

आँख में पानी रखो होठों पे चिंगारी रखो
ज़िन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो

~64~

इससे पहले के हवा शोर मचाने लग जाए
मेरे अल्लाह मेरी खाक ठिकाने लग जाए

~65~

इसी जगह पे वो भूका फ़क़ीर रहता था
तलाश कीजै खज़ाना यहीं से निकलेगा

~66~

ये राज़ जानना चाहो तो मीर को पढ़ लो
फिर एक 'हाँ' का इशारा 'नहीं' से निकलेगा

~67~

हों लाख ज़ुल्म मगर बद-दुआ नहीं देंगे
ज़मीन माँ है ज़मीं को दगा नहीं देंगे

~68~

दोस्ती जब किसी से की जाये
दुश्मनों की भी राय ली जाये

~69~

मेरा इक पल भी मुझे मिल न सका
मैंने दिन रात गुज़ारे तेरे

~70~

सिर्फ़ दो घूँट प्यास की खातिर
उम्र भर धूप में नहाए थे

~71~

आज काँटो भरा मुक़द्दर है
हम ने गुल भी बहुत खिलाए थे

~72~

महाबली से बगावत बहुत ज़रूरी थी
क्रदम यह हम ने समझ सोच कर उठाया है

~73~

ज़िन्दगी क्या है खुद ही समझ जाओगे
बारिशों में पतंगें उड़ाया करो

~74~

इसी से कर्ज़ चुकाए हैं मैंने सदियों के
ये ज़िन्दगी जो हमेशा उधार रहती है

~75~

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तेरे शहर में आते जाते

~76~

मुझ को रोने का सलीका भी नहीं है शायद
लोग हँसते हैं मुझे देख के आते जाते

~77~

हौसले ज़िन्दगी के देखते हैं
चलिए कुछ रोज़ जी के देखते हैं

~78~

बारिशों से तो प्यास बुझती नहीं

आइए ज़हर पी के देखते हैं

~79~

बैर दुनिया से क़बीले से लड़ाई लेते
एक सच के लिए किस-किस से बुराई लेते

~80~

अपनी साँसें बेच कर मैंने जिसे आबाद की
वो गली जन्नत तो अब भी है मगर शद्दाद¹ की

~81~

इम्तेहाँ लेंगे यहाँ सब्र का दुनिया वाले
मेरी आँखों! कहीं ऐसे में छलक मत जाना

~82~

ज़िन्दा रहना है तो सड़कों पे निकलना होगा
घर के बोसीदा किवाड़ों से चिपक मत जाना

~83~

रिश्ता-रिश्ता साया-ए-दीवारो-दर में कैद हूँ
मेरा दुख ये है कि मैं अपने ही घर में कैद हूँ

~84~

मेरे पत्थर, मेरा सीना, मेरे नाखुन, मेरे ज़ख्म
मैं कोई सौदा हूँ और अपने ही सर में कैद हूँ

~85~

नौजवां बेटों को शहरों के तमाशे ले उड़े
गाँव की झोली में कुछ मजबूर माँएँ रह गयीं

~86~

बादा-खाने², शायरी, नग्मे, लतीफ़े, रतजगे³
अपने हिस्से में यही देसी दवाएँ रह गयीं

~87~

मैं चाहता था खुद से मुलाकात हो मगर
आईने मेरे क्रद के बराबर नहीं मिले

~88~

हालाँकि दोस्तों से बहुत कम मिले हैं हम
लेकिन कभी नक्राब लगाकर नहीं मिले

~89~

मुझे तूने किनारे से है जाना
ज़रा गहरे उतरना चाहिए था

~90~

फलक पर तबसिरा करने से पहले
ज़मीं का क़र्ज उतरना चाहिए था

~91~

आसमां मुझसे दोस्ती कर ले
दरबदर मैं भी दरबदर तू भी

~92~

मैं तेरे साथ तू किसी के साथ
हमसफ़र मैं भी हमसफ़र तू भी

~93~

ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं
ज़िन्दगी भर न यह कमाल आया

~94~

वह जो दो गज़ ज़मीं थी मेरे नाम
आसमां की तरफ़ उछाल आया

~95~

दुश्मन से तो टक्कर ली है सौ सौ बार
सामना अब के यारों का है मौला खैर

~96~

पाँव पत्थर करके छोड़ेगी अगर रुक जाइये
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

~97~

तू तो अपने मश्विरों के ज़ख़्म दे कर छोड़ दे
मुझको ज़िन्दा किस तरह रहना है मुझ पर छोड़ दे

~98~

अब तो इस शीशे के घर में साँस लेना है मुहाल
कम से कम सर फोड़ने को एक पत्थर छोड़ दे

~99~

जब कभी फूलों ने खुशबू की तिजारत की है
पत्ती-पत्ती ने हवाओं से शिकायत की है

~100~

यूँ लगा जैसे कोई इत्र फ़ज़ा में घुल जाए
जब किसी बच्चे ने कुरआं की तिलावत की है

~101~

ज़िन्दगी को ज़ख़्म की लज़ज़त से मत महरूम कर
रास्ते के पत्थरों से ख़ैरियत मालूम कर

~102~

टूट कर बिखरी हुई तलवार के टुकड़े समेट
और अपने हार जाने का सबब मालूम कर

~103~

ये भूल मत कि अभी सर पर आसमान भी है
किसी के सर का दुपट्टा उतारने वाले

~104~

बिठाए फिरते हैं दुनिया को अपनी पलकों पर

मेरी निगाह से दुनिया उतारने वाले

~105~

हाथ अभी पीछे बँधे रहते हैं चुप रहते हैं
देखना ये है तुझे कितने कमाल आते हैं

~106~

किसी गरीब दुपट्टे का क़र्ज है उस पर
तुम्हारे पास जो रेशम की शाल है ठाकुर

~107~

साँसों पर लिख रब का नाम सुबह शाम
यही वज़ीफ़ा है अनमोल अल्लाह बोल

~108~

चाँद ज़्यादा रौशन है तो रहने दो
जुगनू भय्या जी मत भारी किया करो

~109~

मैंने ऐ सूरज तुझे पूजा नहीं समझा तो है
मेरे हिस्से में भी थोड़ी धूप आनी चाहिये

~110~

तूफ़ाँ तो इस शहर में अक्सर आता है
देखें अब के किस का नम्बर आता है

~111~

हमने ही कुछ लिखना पढ़ना छोड़ दिया
वर्ना ग़ज़ल की इतनी क़िल्लत नई होती

~112~

रोटी की गोलाई नापा करता है
इसी लिये तो घर में बरकत नई होती

~113~

नींदें क्या-क्या ख्वाब दिखाकर गायब हैं
आँखें तो मौजूद हैं मंज़र गायब हैं

~114~

ये खाकज़ादे जो रहते हैं बे-ज़बान पड़े
इशारा कर दें तो सूरज ज़मीं पर आन पड़े

~115~

उठे हैं हाथ मेरे हुर्मते-ज़मीं के लिए
मज़ा जब आए कि अब पाँव आसमान पड़े

~116~

घर से ये सोच के निकला हूँ कि मर जाना है
अब कोई राह दिखा दे कि किधर जाना है

~117~

जिस्म से साथ निभाने की मत उम्मीद रखो
इस मुसाफ़िर को तो रस्ते में ठहर जाना है

~118~

ख्वाबों में जो बसी है वो दुनिया हसीन है
लेकिन नसीब में वही दो गज़ ज़मीन है

~119~

सुलगते चीखते मौसम की वापसी होगी
नई रुतों में नए ग़म की वापसी होगी

~120~

हमें बहार से दिलचस्पियाँ नहीं लेकिन
खुशी ये है कि तेरे ग़म की वापसी होगी

~121~

सबके दुख-सुख उसके चेहरे पर लिखे पाए गए
आदमी क्या था हमारे शहर का अखबार था

~122~

लोग होंठों पे सजाए हुए फिरते हैं मुझे
मेरी शोहरत किसी अखबार की मोहताज नहीं

~123~

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

~124~

सब लकीरों पे छोड़ रखा है
आप भी कुछ कमाल रखा करो

~125~

खाली खाली उदास उदास आँखें
इन में कुछ ख्वाब पाल रक्खा करो

~126~

क्रागजों की सब सियाही बारिशों में धुल गयी
हमने जो सोचा तेरे बारे में सब बेकार था

~127~

इन्तज़ामात नए सिर से सँभाले जाएँ
जितने कमज़र्फ़ हैं महफ़िल से निकाले जाएँ

~128~

खाक में यूँ न मिला ज़ब्त की तौहीन न कर
ये वो आँसू हैं जो दुनिया को बहा ले जाएँ

~129~

फूल ही फूल पांव से सर तक
नाम उसका बहार होना था

~130~

ऐ खुदा मेरी ज़िन्दगी पे मुझे

कुछ न कुछ इख्तियार होना था

~131~

चाँद तेशा है, ज़ख्म रंगत है
शायरी कुछ नहीं अलामत है

~132~

छोड़िये भी दुखों सुखों का हिसाब
आप मिलते हैं ये ग़नीमत है

~133~

जी चाहता है बस उसे पढ़ते ही जाईये
चेहरा है या वरक़ है खुदा की किताब का

~134~

सूरजमुखी के फूल से शायद पता चले
मुँह जाने किसने चूम लिया आफ़ताब का

~135~

मुझ में कितने राज़ हैं बतलाऊँ क्या?
बन्द एक मुद्दत से हूँ खुल जाऊँ क्या?

~136~

कल यहाँ मैं था जहाँ तुम आज हो
मैं तुम्हारी ही तरह इतराऊँ क्या?

~137~

देखते ही देखते कितनी दुकाने खुल गयीं
बिकने आए थे वह बाज़ारों के मालिक हो गये

~138~

एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तो
दोस्ताना ज़िन्दगी से मौत से यारी रखो

~139~

हमीं बुनियाद का पत्थर हैं लेकिन
हमें घर से निकाला जा रहा है

~140~

थे पहले ही कई साँप आस्तीं में
अब एक बिच्छू भी पाला जा रहा है

~141~

ज़िन्दगी तेरी आस रखती है
ये निबोली मिठास रखती है

~142~

मौत अपने बदन पे कुछ दिन तक
ज़िन्दगी का लिबास रखती है

~143~

साल भर ईद का रस्ता नहीं देखा जाता
वह गले मुझसे किसी और बहाने लग जाए

~144~

बोरिये पे बैठिये कुल्हड़ में पानी पीजिये
हम क़लन्दर हैं हमारी मेज़बानी और है

~145~

न हमसफ़र न किसी हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा हमीं से निकलेगा

~146~

शराब पी के बड़े तज़ुर्बे हुए हैं हमें
शरीफ़ लोगों को हम मशविरा नहीं देंगे

~147~

वो पाँच वक़्त नज़र आता है नमाज़ों में
मगर सुना है कि शब में जुआ चलाता है

~148~

ये लोग पाँव नहीं ज़हन से अपाहिज हैं
उधर चलेंगे जिधर रहनुमा चलाता है

~149~

बोतलें खोलके तो पी बरसों
आज दिल खोल कर भी पी जाये

~150~

दोस्त है तो मेरा कहा भी मान
मुझसे शिकवा भी कर, बुरा भी मान

~151~

हजार परदों में खुद को छुपा के बैठ मगर
तुझे कभी न कभी बेनकाब कर दूँगा

~152~

बेसमर जान के हम काट चुके हैं जिनको
याद आते हैं, कि बेचारे हवा देते थे

~153~

अब से पहले के जो क्रांतिल थे, बहुत अच्छे थे
क्रल्ल से पहले, वो पानी तो पिला देते थे

~154~

मोड़ होता है जवानी का सँभलने के लिये
और सब लोग यहीं आके फिसलते क्यों हैं

~155~

नींद से मेरा तआल्लुक ही नहीं बरसों से
ख्वाब आ आके मेरी छत पे टहलते क्यों हैं

~156~

रोज़ तारों को नुमाइश में खलल पड़ता है

चाँद पागल है अँधेरे में निकल पड़ता है

~157~

चाँद को हमने कभी गौर से देखा ही नहीं
उससे कहना कि कभी दिन के उजालों में मिले

~158~

मेरी गज़लों ने ये एज़ाज़ दिया है मुझको
मेरे दुश्मन भी मेरे चाहने वालों में मिले

~159~

चेहरों के लिए आईने कुर्बान किए हैं
इस शौक्र में अपने बड़े नुक़सान किए हैं

~160~

ऐ धड़कनों अब और ठिकाना कोई ढूँड़ो
हम दिल में तो उस शख्स को मेहमान किए हैं

~161~

उस आदमी को बस एक धुन सवार रहती है
बहुत हसीं है ये दुनिया इसे ख़राब करूँ

~162~

ये अलग बात हम भटक जाएँ
वैसे दुनिया बहुत बड़ी तो नहीं

~163~

आते-आते ही आएगी मंज़िल
रास्ते में कहीं पड़ी तो नहीं

~164~

अपने रस्ते बनाए ख़ुद मैंने
मेरे रस्ते से हट गई दुनिया

~165~

जब भी दुनिया को छोड़ना चाहा
मुझसे आकर लिपट गई दुनिया

~166~

अब उसकी ठोकरों में ताज होंगे
वो सारी उम्र नंगे सर रहा है

~167~

हो फुर्सत तो हमारे दुःख भी बाँटे
ज़रा देखो खुदा क्या कर रहा है

~168~

कहाँ गुज़ारी हैं सासैं जवाब माँगेगा
वो जब भी हमसे मिलेगा हिसाब माँगेगा

~169~

कश्ती पर आँच आ जाये तो हाथ कलम करवा देना
लाओ मुझे पतवारें दे दो मेरी ज़िम्मेदारी है

~170~

प्यास अगर मेरी बुझा दे तो मैं जानूँ वर्ना
तू समन्दर है तो होगा मेरे किस काम का है

~171~

अब तेरी बारी है, आईने बचाले अपने
मेरे हाथों में जो पत्थर है तेरे नाम का है

~172~

यहाँ तो चारों तरफ़ कोयले की खानें हैं
बचा न पायेगा कपड़े सँभालता क्यों है

~173~

यूँ लम्हा लम्हा सहारों का कर्ज़दार न कर
गिराना है तो गिरा दे सँभालता क्यों है

~174~

सफ़र की हद है वहाँ तक कि कुछ निशान रहे
चले चलो कि जहाँ तक ये आसमान रहे

~175~

तू जो चाहे तो तेरा झूठ भी बिक सकता है
शर्त इतनी है कि सोने का तराजू रखले

~176~

सफ़र में जितना मज़ा है, वो मंज़िलों पे कहाँ
मैं इस दफ़ा तो बहुत दूर जाके लौट आया

~177~

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

~178~

शहरों शहरों गाँव का आँगन याद आया
झूठे दोस्त, और सच्चा दुश्मन याद आया

~179~

पीली पीली फ़सलें देख के खेतों में
अपने घर का खाली बर्तन याद आया

~180~

अपनी कागज़ की हवेली भीगने से बच गई
अक्रलमन्दी की, कि मौसम का इशारा पढ़ लिया

~181~

तेरा एहसान है जितनी भी मयस्सर कर दे
हाँ मगर इतनी हो साक़ी के गला तर कर दे

~182~

सारे बादल हैं उसी के वो अगर चाहे, तो

मेरे तपते हुए सेहरा को समन्दर कर दे

~183~

मैंने दिल देकर उसे की थी वफ़ा की इब्लिदा
उसने धोका दे के ये क्रिस्सा मुकम्मल कर दिया

~184~

ये हवाएँ कब निगाहें फेर लें किसको खबर
शोहरतों का तख़्त जब टूटा तो पैदल कर दिया

~185~

मेरे दुश्मन की कोई बात तो सच हो जाये
आ मेरे दोस्त किसी दिन मुझे धोका दे दे

~186~

तुमको राहत की तबीयत का नहीं अंदाज़ा
वो भिकारी है मगर माँगो तो दुनिया दे दे

~187~

यहाँ तो मौत का सैलाब आता रहता है
बहुत बचा था, मगर अब के बार मैं भी हूँ

~188~

न जाने किस के मुक़द्दर में वो लिखा होगा
मगर ये सच है कि उम्मीदवार मैं भी हूँ

~189~

मैं परबतों से लड़ता रहा और चन्द लोग
गीली ज़मीन खोद के फ़रहाद हो गये

~190~

बैठे हुए हैं क्रीमती सोफों पे भेड़िये
जंगल के लोग शहर में आबाद हो गये

~191~

अब तो सेहरा, और समन्दर के लिये हैं बारिशें
खेतियाँ जितनी थीं उन पर कारखाने लग गये

~192~

आपसे इक बात कहनी है, बस इतनी बात थी
मुझको इतनी बात कहने में ज़माने लग गये

~193~

मुझसे दिल का हाल कोई कब पूछता है
ग़ज़लों की फ़रमाईश होती रहती है

~194~

सोने का रथ फ़क़ीर के घर तक न आयेगा
कुछ माँगना है हमसे तो पैदल उतर के आ

~195~

सारी फ़ितरत तो नक़ाबों में छिपा रक्खी थी
सिर्फ़ तस्वीर उजालों में लगा रक्खी थी

~196~

घरों की राख फिर देखेंगे पहले देखना ये है
घरों को फूँक देने का इशारा कौन करता है

~197~

नया बहाना है, हर पल उदास होने का
ये फ़ायदा है तेरे घर के पास होने का

~198~

मेरी ग़ज़ल से बना ज़हन में कोई तस्वीर
सबब न पूछ मेरे देवदास होने का

~199~

जिसने कुछ देखा न हो गाँव के पनघट के सिवा
उसको दरिया भी समन्दर की तरह लगता है

~200~

वो इक इशारे पे दुनिया खरीद सकते हैं
जो सूरतों से बहुत ही गरीब लगते हैं

~201~

बहुत काँटों भरी दुनिया है लेकिन
गले का हार होती जा रही है

~202~

जब भी कोई इनआम मिला है, मेरा नाम भी भूल गये
जब भी कोई इल्ज़ाम लगा है, मुझ पर लाकर ढोल दिया

~203~

अब ग़म आयें, खुशियाँ आयें, मौत आये या तू आये
मैंने तो बस आहट पाई और दरवाज़ा खोल दिया

~204~

तुम तो सूरज के पुजारी हो, तुम्हें क्या मालूम
रात किस हाल में कट कट के सहर तक पहुँची

~205~

ये तेरी पीठ है ऐ मेरे बेखबर दुश्मन
मगर मुझे तेरे सीने पर वार करना है

~206~

तुझे क़बीले के क़ानून तोड़ने होंगे
मुझे तो सिर्फ़ तेरा इन्तिज़ार करना है

~207~

इक नई मस्जिद बनाना चाहते हैं शहर में
तेरे कूचे का कोई पत्थर उठा ले जायेंगे

~208~

ये शहर वो है जहाँ राक्षस भी रहते हैं

हर इक तराशे हुए बुत को देवता न कहो

~209~

हमारे ऐब हमें उँगलियों पर गिनवाओ
हमारी पीठ के पीछे हमें बुरा न कहो

~210~

खुदा से काम कोई आ पड़ा है
बहुत मस्जिद के चक्कर लग रहे हैं

~211~

वो अन्दर से बहुत प्यासे हैं साहिब
बज़ाहिर जो समन्दर लग रहे हैं

~212~

ये मशविरा है कि बैसाखियाँ उधार न ले
उड़नचियों से कोई कितनी दूर जायेगा

~213~

घर के बाहर ढूँडता रहता हूँ दुनिया
घर के अन्दर दुनियादारी रहती है

~214~

सब को दुःख से मुक्ति मिलने वाली है
बोतल से इक देव निकलने वाला है

~215~

खुले-खुले से रहने के हम आदी हैं
ध्यान किसे है दरवाज़े की सांकल का

~216~

इसी उम्मीद पर ये रतजगे हैं
किसी दिन रात भर होगी हमारी

~217~

दुआ माँगेगें कब तक आसमां से
ज़मीं कब मोअतबर होगी हमारी

~218~

बुलन्दियों के सफ़र में ये ध्यान आता है
ज़मीन देख रही होगी रास्ता मेरा

~219~

मैं जंग जीत चुका हूँ मगर ये उलझन है
अब अपने आप से होगा मुक़ाबला मेरा

~220~

ज़िन्दगी एक अधूरी तस्वीर
मौत आए तो मुकम्मल हो जाये

~221~

फिर खुदा चाहे तो आँखें ले ले
बस मेरा ख़्वाब मुकम्मल हो जाये

~222~

वह जो मुनसिफ़ है तो क्या कुछ भी सजा दे देगा
हम भी रखते हैं जुबां पहले ख़ता पूछेंगे

~223~

उजाले बाँटने वालों पर क्या गुज़रती है
किसी चिराग़ की मानिन्द जल के देखुँगा

~224~

अब अगर कम भी जियें हम तो कोई रन्ज नहीं
हमको जीने का सलीक़ा है यही काफ़ी है

~225~

क्या ज़रूरी है कभी तुम से मुलाक़ात भी हो
तुमसे मिलने की तमन्ना है यही काफ़ी है

~226~

वह मेरी हमक़दम होने न पाई
जो मेरी हम सफ़र कर दी गयी है

~227~

है आसमां से बुलन्द उसका मर्तबा जिसको
शर्फ़ है आप के कदमों की धूल होने का

~228~

चलो फ़लक पर कहीं मन्ज़िलें तलाश करें
ज़मीं पर कुछ नहीं हासिल हसूल होने का

~229~

मैं उस मुहल्ले में एक उम्र काट आया हूँ
जहाँ पर घर नहीं मिलते मकान मिलते हैं

~230~

बहुत कठिन है मसाफ़त नई ज़मीनों की
क़दम-क़दम पर नये आसमान मिलते हैं

~231~

हम ठहरे बंजारे हम बंजारों को
दरवाज़ों और दीवारों से क्या लेना

~232~

आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत
हम चिराग़ों का भी उतना ही अदब करते हैं

~233~

ख़ुद को पत्थर सा बना रखा है कुछ लोगों ने
बोल सकते हैं मगर बात ही कब करते हैं

~234~

मैं आकर दुश्मनों में बस गया हूँ

यहाँ हमदर्द हैं दो चार मेरे

~235~

क्या कहीं क़त्ल हो गया सूरज
रात से रात भर से पूछते हैं

~236~

हम ने खुद अपनी रहनुमाई की
और शोहरत हुई खुदाई की

~237~

हसीन लगते हैं जाड़ों में सुबह के मन्ज़र
सितारे धूप पहन कर निकलने लगते हैं

~238~

बुलन्दियों का तसव्वुर भी खूब होता है
कभी कभी तो मेरे पर निकलने लगते हैं

~239~

बुझ गये चाँद सब हवेली के
जल रहा है चिराग़ मुफ़लिस का

~240~

भूल जाना उसे आसान नहीं
याद रखना भी हुनर है उसको

~241~

हों निगाहें ज़मीन पर लेकिन
आसमां पर निशाना रखा जाए

~242~

दिल लुटाने में एहतियात रहे
यह खज़ाना खुला न रखा जाए

~243~

आँगन के मासूम शजर ने एक कहानी लिखी है
इतने फल शाखों पर नहीं थे जितने पत्थर बिखरे हैं

~244~

तुला है धूप बरसाने पर सूरज
शजर भी छतरियाँ लेकर खड़े हैं

~245~

किसी दिन चाँद निकला था यहाँ से
उजाले आज भी छत पर खड़े हैं

~246~

है फुरसत तो किसी से इश्क़ कर ले
हमारी ही तरह बेकार हो जा

~247~

दोपहर तक तो साथ चल सूरज
तूने रस्ते में शाम कर दी है

~248~

हमारा ज़िक्र भी अब जुर्म हो गया है वहाँ
दिनों की बात है महफ़िल की आबरू हम थे

~249~

खयाल था कि ये टकराव रोक दें चलकर
जो होश आया तो देखा लहू-लहू हम थे

~250~

आज-कल छुट्टी के दिन भी घर पड़े रहते हैं हम
शाम, साहिल, तुम, समन्दर सब पुराने हो गए

~251~

सच का बोझ उठाए हूँ अब पलकों पर
पहले मैं भी ख़्वाब-नगर में रहता था

~252~

अब एक दरिया है और फिर एक समन्दर
अभी तो सिर्फ नदी पार की है

~253~

नफ़रत का बाज़ार न बन
फूल खिला तलवार न बन

~254~

रिश्ता-रिश्ता लिख मंज़िल
रस्ता बन दीवार न बन

~255~

इक समन्दर अपने ही अन्दर डुबोना है मुझे
एक कश्ती चाहिए मुझको सवारी के लिए

~256~

दिलों में आग लबों पर गुलाब रखते है
सब अपने चेहरों पर दुहरी नक्राब रखते हैं

~257~

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

~258~

खबर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पर ठोकर लगा के लौट आया

~259~

फूँक डालूँगा किसी रोज़ मैं दिल की दुनिया
ये तिरा खत तो नहीं है कि जला भी न सक्ूँ

~260~

इक न इक रोज़ कहीं ढूँढ़ ही लूँगा तुझको

ठोकरें ज़हर नहीं हैं कि मैं खा भी न सकूँ

~261~

सब ही अपनी तेज़गामी के नशे में चूर हैं
लाख आवाज़ें लगा लीजै ठहरता कौन है

~262~

भाई समझ रहा है तो आ जा गले लगें
दुश्मन समझ रहा है तो हसरत निकाल ले

~263~

अभी रंगों की ज़बाँ गुंग पड़ी है लेकिन
जब ये तस्वीर बनेगी तो क़यामत होगी

~264~

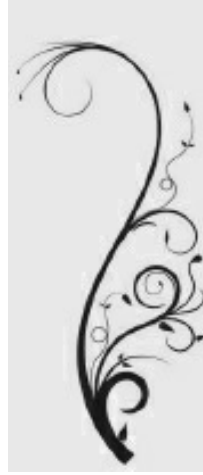
अब के बारिश में नहाने का मज़ा आएगा
बेलिबासी की तरह घर की खुली छत होगी

~265~

प्यास तो अपनी सात समन्दर जैसी थी
नाहक़ हमने बारिश का एहसान लिया

-
1. एक बादशाह जिसने स्वर्ग बनवाया और उसमें क़दम रखते ही मर गया
 2. शराब घर
 3. रातभर जागना

फ़िल्मी नग़मे



क़रीब (1998)

ये क्या हुआ - ये कब हुआ,
कैसे हुआ - क्या पता...

चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं - चोरी चोरी फिर नींदें उड़ीं
चोरी चोरी ये दिल ने कहा, चोरी में भी है मज़ा...

क्या जाने क्या मिल गया, क्या जाने क्या खो गया
तूने ये क्या कर दिया, मुझको ये क्या हो गया...
पलकें झुकीं, पलकें उठीं, क्या कह दिया - क्या सुना...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं...

फूलों के ख़्वाबों में आकर, खुशबू चुरा ले गई,
बादल का आँचल भी आकर, पागल हवा ले गई...
एक फूल ने एक फूल से फिर कान में कुछ कहा...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं...

रिश्तों के नीले भंवर कुछ और गहरे हुए,
तेरे मेरे साये हैं, पानी पर ठहरे हुए...
जब प्यार का मोती गिरा, बनने लगा दायरा...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं - चोरी चोरी फिर नींदें उड़ीं
चोरी चोरी ये दिल ने कहा, चोरी में भी है मज़ा...

मीनाक्षी (2004)

कोई सच्चे ख्वाब दिखा कर, आँखों में समा जाता है,
ये रिश्ता... ये रिश्ता क्या कहलाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

जब सूरज थकने लगता है, और धूप सिमटने लगती है,
कोई अनजानी सी चीज़ मेरी साँसों से लिपटने लगती है,
मैं दिल के करीब आ जाती हूँ, दिल मेरे करीब आ जाता है,
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

इस गुमसुम झील के पानी में, कोई मोती आकर गिरता है,
इक दायरा बनने लगता है, और बड़के भँवर बन जाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

तस्वीर बनाती रहती हूँ, मैं टूटी हुई आवाज़ों पर,
इक चेहरा ढूँढ़ती रहती हूँ, दीवारों कभी दरवाज़ों पर,
मैं अपने पास नहीं रहती, और दूर से कोई बुलाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

इश्क़ (1997)

देखो देखो जानम हम दिल अपना तेरे लिए लाए,
सोचो सोचो दुनिया में क्यूँ आए, तेरे लिए आए...
अब तू हमें चाहे, अब तू हमें भूले, हम तो बने रहेंगे तेरे साये..

ये क्या हमें हुआ, ये क्या तुम्हें हुआ
साँसों के दरिया में हलचल सी होने लगी...
नई है ये सज़ा, सज़ा में है मज़ा,
चाहत को चाहत की शबनम भिगोने लगी...
अब और क्या चाहें, अब और क्या देखें
देखा तुम्हें तो दिल से निकली हाए...
देखो देखो जानम हम ...

सुनो - ज़रा सुनो, चुनो - हमें चुनो
आँखों ने आँखों से शरमा के कुछ कह दिया
सुना - मैंने सुना, चुना - तुम्हें चुना
शीशे ने शीशे से टकरा के कुछ कह दिया
हैं पल मुरादों के, ये पल हैं यादों के
अब मेरी जाँ रहे या चली जाये...
देखो देखो जानम हम दिल अपना तेरे लिए लाए,
सोचो सोचो दुनिया में क्यूँ आए तेरे लिए आए...
अब तू हमें चाहे, अब तू हमें भूले, हम तो बने रहेंगे तेरे साये...

मर्डर (2004)

दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका
दिल को हज़ार बार टोका, टोका, टोका
दिल है हवाओं का झोंका, झोंका, झोंका
दिल को बचाना, धोखा ना खाना
धोखा है प्यार, यार - प्यार है धोखा...

ढूँढेगा कोई बहाना, ढूँढेगा कोई निशाना
दिल का बाज़ार है यहाँ तो, दिल को दिलों से बचाना...
दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका...

बचना इस आशिक़ी से बचना, काँटों की दोस्ती से बचना
आँखों में भर दे अँधेरा, तुम ऐसी रोशनी से बचना...
दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका
दिल को हज़ार बार टोका, टोका, टोका
दिल है हवाओं का झोंका, झोंका, झोंका
दिल को बचाना, धोखा ना खाना
धोखा है प्यार, यार - प्यार है धोखा...

गली गली चोर है (2012)

ये सब मन के भी हैं काले, ये सब धन के भी हैं काले
मेरे घर में ही रहते हैं मेरा घर लूटने वाले...

जो चीज़ें जंगलों की हैं उन्हें जंगल में रहना था,
वो अब दिल्ली में रहते हैं, जिन्हें चम्बल में रहना था...

गली गली चोर है, गली गली चोर है
करप्शन - करप्शन - करप्शन का शोर है
चोरों का दौर है, चोरों का ज़ोर है
चारों से बंधी हुई चोरों की डोर है
गली गली चोर है गली गली चोर है

करप्शन ने लिक्खी है सारी कहानी, बिना घूसखोरी ना बिजली ना पानी
यहाँ साँस लेने की कीमत लगेगी, घरों से निकलते ही रिश्त लगेगी
यहाँ आम लोगों का है ये मुक़द्दर, ना कुछ घर के बाहर ना कुछ घर के अंदर
ना नेहरू का सपना सलामत रहा है, ना गाँधी का चरखा सलामत रहा है
अदालत कचहरी ये वर्दी ये थाने, चलाते हैं रिश्त के सब कारखाने
दिशा कोई भी हो लुटेरो का ज़ोर है, गली गली चोर है, गली गली चोर है

ये टोपी, ये धोती, ये कुर्ते पजामे, सब इनके नाटक हैं, सब इनके ड्रामे
कोई इनसे कह दे गिरेबां में झाकें, दुआ है के खुल जाएँ दिल्ली की आँखें
लड़ाई अभी हमको रखनी है जारी, है आज़ादी अब तक अधूरी हमारी
सियासी लुटेरों का कैसा ये दौर है, गली गली चोर है, गली गली चोर है

घातक (1996)

मारा रे, तेरी आँखों ने मुझे मारा रे...
हारा रे, दिल ये तुझ पर हारा रे...

कोई जाये तो ले आए, मेरी लाख दुआएं पाए
मैं तो पिया की गली जिया भूल आई रे...

मिल जाये दिल मेरा दिल से पूछूंगी,
कह दे मेरे दिल तू किसपे मरता है
दिल गायब है मेरा देखो लेकिन रे, कुछ-कुछ धक-धक करता है
दिल मेरा पहेली है, सोने की हवेली है
दिल जबसे हुआ है गुम, मेरी जान अकेली है
सोचा था रख लूँगी मैं दिल से बदल कर दिल
अब जाने कहाँ गुम है सीने से निकल कर दिल
मैं तो रहती हूँ, मैं तो रहती हूँ, हाय घबरायी रे
कोई जाये तो ले आये मेरी लाख दुआएं पाए

दिल चांदी है, चांदी है, दिल चांदी रे,
दिल सोना है, सोना है, दिल सोना रे
चाहत से मोहब्बत से भरा होगा, मेरे क्रांतिल दिल का कोना कोना रे
दिल साथ नहीं जब से, पागल ये जवानी है
मेरा दिल है एक शोला, मेरा हुस्न पानी है
दिल प्यार का है जोगी, दिल प्यार का है रोगी
मेरे दिल पर दिलबर की, तस्वीर बनी होगी
मैं तो जीतने गई थी, मैं तो जीतने गई थी, लेकिन हार आई रे
कोई जाये तो ले आए मेरी लाख दुआएं पाए
मैं तो पिया की गली जिया भूल आई रे...

मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी (1994)

पास वो आने लगे ज़रा ज़रा - नज़रें चुराने लगे ज़रा ज़रा
दिल पर वो छाने लगे ज़रा ज़रा - ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा
हमें वो चाहने लगे ज़रा ज़रा - अपना बनाने लगे ज़रा ज़रा
दिल को धड़काने लगे ज़रा ज़रा - ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा

कहती है ये तेरी पायल, तूने किया मुझे घायल - घायल
शाम सवेरे दिल में मेरे, तूने मचा दिल हलचल हलचल

तेरी मेरी प्रेम कहानी, है सागर का गहरा पानी
लाखों दिन और लाखों रातें, खत्म ना होंगी अपनी बातें
नींदें उड़ाने लगे ज़रा ज़रा, अपना बनाने लगे ज़रा ज़रा
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा

आजा मुझको पागल कर दे, खुशियों से ये दामन भर दे,
हसरत है ये दिल में मेरे, मेहबूबा से दुल्हन कर दे

माँग में तेरी तारे भर दूँ, चाँद को तेरा कंगन कर दूँ
फूलों से तस्वीर बनाऊँ, किरणों से मैं रूप सजाऊँ
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा
साँसों में बसाने लगे ज़रा ज़रा, दिल को लुभाने लगे ज़रा ज़रा
पास वो आने लगे ज़रा ज़रा - नज़रें चुराने लगे ज़रा ज़रा

मिशन कश्मीर (2000)

बुम्बरो बुम्बरो, श्याम रंग बुम्बरो
आए हो किस बगिया से... तुम

भँवरे ओ श्याम भँवरे, खुशियों को साथ लाए
मेहँदी की रात में तुम ले के सौगात आए
काजल का रंग लाए, नज़रें उतारने को
बागों से फूल लाये रस्ते सँवारने को
आओ मेहँदी की छाँव में गीत सुनाएँ - बुम्बरो
झूमे-नाचें साज़ गाएँ, जश्न मनाएँ - बुम्बरो
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

खिल खिल के लाल हुआ मेहँदी का रंग ऐसे
गोरी हथेलियों पर खिलते हो फूल जैसे
ये रंग धूप का है, ये रंग छाँव का है
मेहँदी का रंग नहीं माँ की दुआओं का है
इस मेहँदी का रंग है सच्चा, बाक़ी सारे झूटे
हाथों से अब मेहँदी का ये रंग कभी ना छूटे
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

चंदा की पालकी में दिल की मुराद लाई
जन्नत का नूर ले के मेहँदी की रात आई
रुख पर सहेलियों के ख्वाबों की रोशनी है
सबने दुआएं मांगी, रब ने कुबूल की है
ये हाथों में मेहँदी है या शाम की लाली - बुम्बरो
चाँद सितारे लेकर आए रात निराली - बुम्बरो
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस. (2003)

यार ज़रा माहौल बना, हर पल में उठा सदियों का मज़ा
जो बीत गया सो बीत गया, जो बीतना है वो हंस के बिता...
यार ज़रा माहौल बना, हर दर्द की है बस एक दवा
जी खोल के जी, जी जान से जी, कुछ कम ही सही पर शान से जी...

देख ले... आँखों में आँखे डाल
सीख ले... हर पल मैं जीना यार
सोच ले... जीवन के पल हैं चार
याद रख... मरना है एक बार
मरने से पहले जीना... सीख ले - देख ले...

बैय्याँ... खुशियों की थाम के बैय्याँ - ग़म की मरोड़ कलईय्याँ...
ग़म का प्यारे ग़म मत करना - छोड़ दे अब तो हर दिन मरना
मरने से पहले जीना... सीख ले - देख ले... आँखों में आँखे डाल...

हईय्या... साँसों की धुन पे गा ले हईय्या - जीवन है बरफ की नैय्या...
नैय्या पिघले हौले हौले - चाहे हँस ले चाहे रो ले
मरने से पहले जीना... सीख ले
देख ले... आँखों में आँखें डाल
सीख ले... हर पल में जीना यार
सोच ले... जीवन के पल हैं चार
याद रख... मरना है एक बार
मरने से पहले जीना... सीख ले

खुद्दार (1994)

सोहनी को महिवाल की - हीर को राँझे की
शीरी को फरहाद की - लैला को मजनूँ की
सबको किसी की ज़रूरत है...

तुम मानो या ना मानो, पर प्यार इन्सां की ज़रूरत है
दिल लगा के देखो, ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है

रंग वीरान थे, फूल बेजान थे
प्यार जब तक ना था, हम परेशान थे
बादलों में भी है, सागरों में भी है
फूल में ही नहीं, पत्थरों में भी है
सबके दिल में सबकी नज़र में
किसी ना किसी की चाहत है
दिल लगा के देखो, ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत है

प्यार का रंग ले, दिल की तस्वीर से
अपनी किस्मत बदल, मेरी तक्रदीर से
साथ जिसके चाहने वाला
किस्मत उसी की किस्मत है
दिल लगा के देखो, ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है

द जेन्टलमैन (1994)

हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे
तेरे ख़्यालों को थोड़ा सा प्यार कर लेंगे

मोहब्बतों की कहानी, कहानी तुझे सुनाएँगे
तुझे बुलाएँगे ख़्वाबों में और जगायेंगे
हवा चलेगी तो आँचल, आँचल की याद आएगी
घटा उठेगी तो काजल, काजल की याद आयेगी
तेरे हसीन तसव्वुर को प्यार कर लेंगे
यूँ याद हम भी तुझे बार बार कर लेंगे
हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे...

जो प्यार करते हैं वो इन ग़मों को सहते हैं
मोहब्बतों में तूफ़ाँ आते रहते हैं
तुम्हारे नाम को धड़कन, धड़कन के साथ रख लेंगे
तुम्हारे चेहरे को दर्पण, दर्पण के साथ रख लेंगे
ये दूरियों का समंदर भी पार कर लेंगे
तमाम उम्र तेरा इंतज़ार कर लेंगे
हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे...

हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे
तेरे ख़्यालों को थोड़ा सा प्यार कर लेंगे

नाजायज़ (1995)

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तू ही मेरी बंदगी है, तू ही मेरी आरती है
मुझे क्या गरज़ के दुनिया, तुझे क्या पुकारती है
तुझे ज़िंदगी नई दूँ, तुझे नाम भी नया दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ

वो खुशी की रोशनी हो के ग़मों का हो अंधेरा
जो नसीब होगा तेरा वो नसीब होगा मेरा
मेरे हाथ की लकीरें तेरे हाथ पे सजा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तुझे चैन लेने देगी ना कभी मेरी मोहब्बत
तेरे दिल के आईने में रहेगी मेरी ही सूरत
ना कभी भुला सकेगी तू मेरे दिल की चाहत
कोई ख़्वाब तो नहीं मैं मुझे हो सके भुला तू
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...
मेरी तरह ज़िंदगी में तू कभी ना चैन पाये
मैं जैसे रो रहा हूँ तुझे भी कोई रुलाये
मेरे बिन अगर जिये तु तो कभी जिया ना जाये
तु कभी ना भूल पाये मैं तुझको वो सज़ा दूँ

आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ

आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

हमेशा (1997)

ए दिल हमें इतना बता
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता

ए दिल हमें इतना बता
दिल ही अगर एक दर्द हो
तो क्या करें दिल की दवा
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता

जिन्हें हमने नींदों में ख्वाबों में पाला
वो आँखों की ठंडक वो दिल का उजाला
हैं बेताब हम भी ये वो मानते हैं
मगर वह इशारों को कम जानते हैं
ज़माने की नज़रों से हमने बचा के
उन्हें धड़कनों में रखा है छुपा के
वो चेहरा कोई आईना भी न देखे
कोई और तो क्या खुदा भी न देखे
खुदा भी न देखे, खुदा भी न देखे
माँगी है ये दिल ने दुआ
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता
दिल ही अगर एक दर्द हो...
ये दिल जिनकी चाहत में पागल बना है
उन्हें क्या खबर है हमें क्या हुआ है
उन्हें क्या पता क्या है हालत हमारी
तड़पती है कैसे मोहब्बत हमारी

ये दिल कह रहा है धड़कते धड़कते
वो आएंगे एक दिन तड़पते तड़पते
हमारे हैं वो उनको पा के रहेंगे
अगर मिल न पाये तो हम छीन लेंगे
तो हम छीन लेंगे - तो हम छीन लेंगे
हम कुछ नहीं उनके बिना
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता
दिल ही अगर एक दर्द हो
तो क्या करें दिल की दवा

क़रीब (1998)

शाद रखे, आबाद रखे, रब्बा तेनु
हो रब्बा तेनु...

माहिया... रीत यही जग की...

दुल्हन बनी है बन्नी आज बन्नो शहज़ादी
आई रुत आई, रुत आई आज मुरादों दी
छेती छेती मेहंदी लांवा... सोणा सोणा चुड़ा पांवा

इन आँखियों में जाये कैसे कजरा रे... इनमें कोई बसता
जिस रस्ते पे जाये ले के साजन रे... वो है मेरा रस्ता
कोई मिलता है, कोई बिछड़ता है... कैसा है ये रिश्ता...
माहिया... रीत यही जग की...

पल दो पल अब इस आँगन में, तेरा और ठिकाना
बाबुल की ये नगरी तुझको छोड़ के होगा जाना...

जिन गलियों में मैंने गुज़ारा है, बचपन हँसता गाता
उस आँगन से उस दरवाज़े से छूट रहा है नाता
कोई बताये तो, कोई समझाये तो... दिन ये क्यूँ है आता...
माहिया... रीत यही जग की...

हीरो हिन्दुस्तानी (1998)

ऐसी वैसी बात नहीं, छोटी मोटी बात नहीं
ये तो मोहब्बत है, ये ही इबादत है...
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

कभी ये प्यार है रेशम, कभी खुशबु, कभी मौसम
कभी शोला, कभी शबनम...
कहीं सरगम कहीं संगम, कहीं प्रीतम कहीं हमदम
किसी से तुम किसी से हम...
चाहत के रिश्ते का जो नाम रख दो वही हो जाता है
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

धड़क उठता है दिल छूम छुम, जुबां चुप चुप, नज़र गुम सुम
ये चाहत की निशानी है...
इसे आँखें सुनाती हैं, इसे आँखें समझती हैं
ये आँखों की कहानी है...
बाहों की राहों में कोई दीवाना जब खो जाता है
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

ऐसी वैसी बात नहीं, छोटी मोटी बात नहीं
ये तो मोहब्बत है, ये ही इबादत है...

इंतेहा (2003)

ढलने लगी है रात कोई बात कीजिये
बढ़ने लगी है बात कोई बात कीजिये
है जिंदगी का साथ कोई बात कीजिये
कट जाएगी ये रात कोई बात कीजिये

जाने तन्हाई हमसे क्या कर रही है
दिल की गहराई हमसे क्या कह रही है
एक एक पल के साथ - कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात कोई बात कीजिये

जितनी हदें हैं सब तोड़ डालें, बातों ही बातों में हम
होंठों के रंग से होंठों पे लिख दें, बातें दिलों की सनम
बात चाहत की रोशनी बनके आए
बात सुन सुन के बात भी मुस्कुराए
यूँ सादगी के साथ, कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात, कोई बात कीजिये

पिघलेंगे हम तुम इस चाँदनी में, कब तक घुलेंगे बदन,
प्यासा है दिल, प्यासी ये रुत है, चुभने लगीं हैं किरण
गुनगुनाती है क्या जवानी सुनेंगे
आँखों आँखों में हर कहानी सुनेंगे
होंठों पे रख के हाथ कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात, कोई बात कीजिये

Sssshhh (2003)

कब मेरा हाल ए दिल, पूछोगे तुम सनम
इस इंतज़ार में मर ही न जाएँ हम...
आजा आजा, आजा - निकल न जाये दम...

चाँद... खुद में ना हो जाये गुम
जान... जाने कब आओगी तुम
कब तक चलें इस आग पर - मैं और मेरी दीवानगी
जान... जाने कब आओगी तुम
कभी ये भी सोचा कभी ये भी जाना
के मर मर के ज़िंदा हैं हम
कब मेरा हाले दिल, पूछोगे तुम सनम...

उठने लगा, दिल से धुआं... जलने लगीं, तन्हाइयाँ
इक रात में, अब साथ हैं मैं और मेरी परछाइयाँ
पागल हवा, पागल समां, लगने लगा दुश्मन जहां...
मेरे ख्वाब चुन लो, सज़ा मेरी सुन लो
तुम्हें जिंदगी की क़सम
कब मेरा हाल ए दिल, पूछोगे तुम सनम...

राम शस्त्र (1995)

वाह रे क्या बात है, तू मेरे साथ है
तारों की रात है, प्यार की बारात है

तुझे मांगा था, तुझे पाया है
अब जा के राम पे यकीं आया है

सदियों से थी अपनी दूरी - दिन थे अधूरे रात अधूरी
जन्मों से हूँ तेरा दीवाना - ज़िंदा रहना था बहाना
साजन जब तू और कहीं था - इस दुनिया में कुछ भी नहीं था
जिस दिन अपना प्यार बना है, उस दिन से संसार बना है
मुझे छोड़ ना देना राम कसम - दिल तोड़ ना देना राम कसम
हाथों की लकीरों में तुझको पाया है, अब जा के राम पे यकीं आया है...

इंद्रधनुष अंगड़ाई है तेरी - चाँद नहीं परछाई है तेरी
जब तक चमकेंगे दो तारे - दुनिया लेगी नाम हमारे
प्यार की धुन पे गाता रहूँगा - बन बन के राम आता रहूँगा
छोड़ के सारे रंग चलूँगी - जंगल जंगल संग चलूँगी
तू राम है मेरा राम कसम - तू सीता मेरी राम कसम
धूप हूँ मैं तू मेरा साया है, अब जा के राम पे यकीं आया है...

तुझे मांगा था, तुझे पाया है
अब जा के राम पे यकीं आया है

याराना (1995)

जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया
निंदिया जो उलझी ज़रा ज़रा, चक्कर वो चला गया
चोर चोर...

खोई थी मैं यादों - खुद अपने ही ख्वाबों में
मेरा दुपट्टा नीला था - चोर बहुत ज़हरीला था
कैसे कहूँ क्या बीत गया - दुश्मन मुझसे जीत गया
चोर चोर...

मोम की गुड़िया थी, वो मुझको पत्थर बना गया...
जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया
मैं फूलों की डाली थी, मैं पुजा की थाली थी
मेरे भी कुछ सपने थे, मेरे भी कुछ अपने थे
सारे सपने चूर हुये, सारे अपने दूर हुये
चोर चोर...
चैन से मैं सोई थी, मेरी नींदें उड़ा गया
जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया

तमन्ना (1997)

ये क्या हुआ, ये क्या हुआ
ये क्यूँ हुआ, ये क्यूँ हुआ
कब से संभाला था दिल को कहाँ खो गया

तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं

दिल धड़कता है कब - आँख मिलती है जब
आँख मिलती है कब - वक़्त आता है जब
वक़्त आता है कब - प्यार होता है जब
प्यार होता है कब - यार मिलता है जब
तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं
ये क्या हुआ, ये क्या हुआ...

गर्म सांसें हुईं, जिस्म जलता है क्यूँ
बेवजह रात दिन, दिल मचलता है क्यूँ
आँख से आँख की बात होती है जब
हर गली रास्ता, रूठ जाता है तब
तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं

ये क्या हुआ, ये क्या हुआ
ये क्यूँ हुआ, ये क्यूँ हुआ
कब से संभाला था दिल को कहाँ खो गया

प्रेम-अगन (1998)

हम तुमसे मोहब्बत करते हैं, करते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

तुम पहला प्यार हमारा हो, हम दे दें जान इशारा हो
हम इतनी मोहब्बत रखते हैं, सौ जनम भी कम पड़ सकते हैं
किरणों सी चमकती रहती हो, तुम मुझमें धड़कती रहती हो
दिल में जो प्यार है तुम्हारा, मोम नहीं वो है अंगारा
इस आग में जलते रहते हैं, जलते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

अब दिल वालों की बारी है, खुद मौत भी हमसे हारी है,
अब रंग ही रंग तुम्हारा है, अब हर पल संग तुम्हारा है
तुम किस्मत मेरी बाहों की, तुम मंज़िल मेरी राहों की
साँसों पे तुम्हारा पहरा है, आँखों में तुम्हारा चेहरा,
ये चेहरा पढ़ते रहते हैं, पढ़ते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

हम तुमसे मोहब्बत करते हैं, करते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

खुदर (1994)

बरसात का मौसम, यहाँ हम यहाँ तुम
सजनी को मिल गए साजन... साजन

तुमसा कोई प्यारा कोई मासूम नहीं है
क्या चीज़ हो तुम खुद तुम्हें मालूम नहीं है
लाखों हैं मगर तुमसा यहाँ कौन हंसीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नहीं है

सौ फूल खिले जब ये खिला रूप सुनहरा
सौ चाँद बने जब ये बना चाँद सा चेहरा
इतना भी कोई प्यार की राहों में ना गुम हो
बस होश है इतना के मेरे साथ में तुम हो
धड़कन है कहीं, दिल है कहीं, जान कहीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नहीं है

ये होंठ ये पलकें ये निगाहें ये अदाएं
मिल जाये खुदा मुझको तो में ले लूँ बलाएँ
दुनिया का कोई ग़म भी मेरे पास ना होगा
तुम साथ चलोगे तो ये एहसास ना होगा
आकाश है पैरों में हमारे के ज़मीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नहीं है
ऐसा कोई महबूब ज़माने में नहीं है
क्या चीज़ हो तुम खुद तुम्हें मालूम नहीं है

मीनाक्षी (2004)

ज़िंदगी हाथ मिला, साथ चल, साथ में आ
उम्र भर साथ रही, दो क़दम और सही...

कोइ सूरज की डगर, कोई सोने का नगर
चाँद के रथ पे चले, जहां ठहरे ये नज़र
धूप दरियाओं में है, फिर सफ़र पाँव में है
दिल का आवारा दिया, दूसरे गाँव में है
आओ चलें हम वहीं
दो क़दम और सही...

ख़्वाब ढलते हैं जहां दिल पिघलते हैं जहां
आओ चलते हैं वहीं वो ज़मीं दूर नहीं
दोस्ती होगी वहाँ रोशनी होगी वहां
उस उजाले के लिए जल चुके लाखों दिये
एक हम और सही
दो क़दम और सही...

किसकी आवाज़ है सुन ये नया साज है सुन
कौन देता है सद, चल के देखें ज़रा
रात वीरान सही रात सुनसान सही
हर घड़ी साथ रहे कितने ग़म साथ सहे
थोड़े ग़म और सही
दो क़दम और सही...